दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)

लहरों का राजहंस

24वाँ अंक

जुलाई, 2022 - दिसम्बर, 2022

सर्वाधिक नौभार प्रहस्तन के क्षेत्र में ''सागर श्रेष्ठ सम्मान'' से सज्जित
भारत का नं. 1 महापत्तन – दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दिनांक 23 जनवरी 2023 को केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री
श्री सर्बानंद सोनोवाल द्वारा कंडला में बने ऑयल जेट्टी नं. 7 के उद्घाटन एवं
पोर्ट के विकास में महत्वपूर्ण अन्य कई परियोजनाओं के शिलान्यास का रमणीय दृश्य ।

अध्यक्ष महोदय का संदेश

श्री संजय कुमार मेहता
भा.व.से.
अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियों,

बड़े हर्ष का विषय है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका ‘लहरों का राजहंस’ का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है । उसी क्रम में ‘लहरों का राजहंस’ के चौबीसवें अंक के माध्यम से पुनः आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है । दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है और आप सभी के प्रयासों के फलस्वरूप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन लक्ष्यानुरूप बना हुआ है । इस उपलब्धि के लिए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सराहना के पात्र है । इसके अलावा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालय नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर गठन के उद्देश्य को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने संदर्भाधीन अवधि के दौरान अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संगठित एवं समर्पित प्रयासों से कई उपलब्धियाँ तथा पुरस्कार एवं सम्मान हासिल किए गए हैं । दीनदयाल पत्तन पिछले 16 वर्षो से भारत के प्रमुख पत्तनों में प्रथम स्थान पर बना हुआ है । नौभार प्रहस्तन के मामलें में वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने निर्धारित लक्ष्य को पार करते हुए 137.56 मिलियन मीट्रिक टन नौभार प्रहस्तन का नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है । यह भी अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय की शील्ड योजना के तहत दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को भाषा ‘ख’ क्षेत्र के लिए वर्ष 2013-14, 2014-15 और 2015-16 के लिए द्वितीय पुरस्कार एवं वर्ष जबकि 2018-19 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रयोक्ताओं सहित सभी के संगठिन प्रयासों से हम न केवल इस वर्ष भी बहुउपलब्धियों को बनाये रख पाने में सक्षम होंगे बल्कि इसे और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे और देश की आर्थिक प्रगति में अपने संगठन की ओर से बहुमूल्य योगदान की कर पाएंगे ।

मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण अपने सामाजिक और राष्टीय दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को हर पटल पर सराहा गया है । इसके लिए में आप सभी को बधाई देता हूँ । दीनदयाल पत्तन के अनवरत विकास और उत्कृष्टता को बनाए रखने का संकल्प आप सभी की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है । यह आवश्यक है कि हम सभी एक जुट होकर दीनदयाल पत्तन की समृद्धि, प्रगति और निरंतर विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बने । अंत में, हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासं की मैं सराहना करता हूँ और उन्हें बधाई देता हूँ, साथ ही आशा करता हूं कि पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,
जय हिंद ।

‘हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है ।’ - मौलाना हसरत मोहानी

उपाध्यक्ष महोदय का संदेश

श्री नंदीश शुक्ल
आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियों,

लोकतंत्र में राजभाषा का स्थान अति महत्वपूर्ण है । हिंदी हमारी राजभाषा है अतः राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवेधानिक दायित्व है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है, पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है । हर्ष का विषय है दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की छमाही गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस का चौबीसवां अंक प्रकाशित हो रहा है । हिन्दी गृह पत्रिका के माध्यम से पत्तन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच प्राप्त होता है, साथ ही अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी मिलती है ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पत्तन में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है । इस कार्य में पत्तन के अधिकारी और कर्मचारी पहले से ही अपना योगदान करते आ रहे हैं । कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का निर्वहन भी दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा भलीभांति सफलतापूर्वक किया जा रहा है । मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि पत्तन के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे । इस पत्रिका के माध्यम से पत्तन के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को सबके साथ साझा कर सकते है और एक-दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं ।

मैं, पत्तन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करूंगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मान्यता प्राप्त हो सके और आने वाले वर्षों में भी पुनः दीनदयाल पोर्ट को मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो सके । मैं, अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

जय हिंद ।

सचिव महोदय का संदेश

श्री सी. हरिचंद्रन
सचिव
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के चौबीसवें अंक के माध्यम से आप सब से सम्मुख अपनी बात पुनः रखते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की नियमित गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण अंग है जो राजभाषा कार्यान्वयन की गति को तीव्रता प्रदान करती है। आशा है कि पिछले अंको की तरह यह अंक भी आप सभी को अच्छा लगेगा और आप सभी इसे सराहेंगे।

केन्द्र सरकार के पोत परिवहन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत निकाय होने के नाते दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार द्वारा लागू सभी नीतियों का अनुपालन करना अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी समझता है और भारत राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है अतः हम सबको अपना कार्य यथासंभव हिंदी में करना चाहिए ताकि संविधान की मूल भावना का पालन हो सके। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जनता की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति और तेज होगी और पारदर्शिता आयेगी।

राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की रही है, जिसका अक्षरशः अनुपालन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में भी हो रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं। इसके अलावा हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन, नियमित हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं के आयोजन के साथ-साथ लेखन आदि के क्षेत्र में रुचि रखने वाले दीनदयाल पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी सृजनात्मक क्षमता का सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन कर पाने में सहायता हेतु हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण कंडला / गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का भी बखूबी निर्वहन कर रहा है।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है तथापि इस क्षेत्र में सतत प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है ताकि दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में शीर्षतम बिंदु को भी स्पर्श कर सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि दीनदयाल पत्तन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने सक्रिय एवं समर्पित प्रयास करेंगे तो यह अवश्य संभव हो सकेगा मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मूल्यांकन के सभी स्तरों पर मान्यता और सम्मान प्राप्त होता रहे। इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को पुनश्च बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिन्द।

लहरों का राजहंस

24वाँ अंक
जुलाई 2022 – दिसम्बर 2022

संरक्षक
श्री संजय कुमार मेहता - भा.व.से.
अध्यक्ष

उप–संरक्षक
श्री नंदीश शुक्ल - आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक
श्री सी. हरिचंद्रन - सचिव
श्री प्रदीप महान्ति - उप संरक्षक
श्री बी. भाग्यनाथ - वि.स. एवं मु.ले.अ.
श्री जी.आर.वी. प्रसाद राव - यातायात प्रबंधक
डॉ. अनिल चेलानी - मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री वी. रवीन्द्र रेड्डी - मुख्य अभियंता
श्री ए. रामास्वामी - मुख्य प्रचालन प्रबंधक
श्री सुशीलचंद्र नाहक - उप मुख्य यांत्रिक अभियंता

संपादक
श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय - वरिष्ठ सहायक सचिव

उप–संपादक
डॉ. महेश बापट - वरि. उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री ओम प्रकाश दादलानी - जनसंपर्क अधिकारी
श्री राजेश रोत - उप सामग्री प्रबंधक

सहायक संपादक मंडल
श्रीमती संगीता खिलवानी - वरि. हिन्दी अनुवादक
सुश्री इशरावती यादव - हिन्दी अनुवादक
श्री हरीश बचवानी - वरिष्ठ लिपिक

‘संपादकीय’

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ सहायक सचिव एवं
हिंदी अधिकारी (प्रभारी) एवं
संपादक, लहरों का राजहंस

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका ‘लहरों का राजहंस’ का चौबीसवां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है । हिंदी गृह पत्रिका ‘लहरों का राजहंस’ के माध्यम से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सेवारत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अनेक परिजनों की रचनात्मकता एवं उनके विचारों का प्रवाह आप सबके सामने प्रस्तुत किया जाता है । साथ ही पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उठाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी है ।

दीनदयाल पत्तन, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहा है तथापि बेहतरी की संभावनाएं बनी हुई है । अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं, जिनमें पर्याप्त संख्या में सहभागिता की जा रही है । दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकीरयों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पत्तन में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है । मंत्रालय द्वारा दीनदयाल पत्तन को लगातार चार वर्षों के लिए राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया । इसका साक्षात प्रमाण है । आशा ही नही वरन पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पत्तन की सांवैधानिक जिम्मेदारी के निर्वहन में पत्तन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का योगदान आगे भी बढ -चढ़ कर मिलता रहेगा । इस पत्रिका के माध्यम के पत्तन के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपने मौलिक सृजन क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते है ।

सरकारी/सरकार नियंत्रित कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अधिकारियों के स्तर के लेकर कर्मचारियों के स्तर तक होना अपेक्षित है । अतः सभी अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर निगरानी रखना एवं अधीनस्थ सहकर्मियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना एवं उत्तरदागी बनाना भी अत्यावश्यक है । दीनदयाल पत्तन में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से विनम्र अनुरोध एवं आग्रह है कि अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना सर्वोत्तम योगदान एवं सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहे ताकि संगठिन एवं एकजुट प्रयास से प्रबंधतंत्र की अपेक्षानुरूप राजभाषा कार्यान्वयन के शीर्षस्थ बिंदु को आगे भी स्पर्श किया जा सके ।

सतत सहयोग हेतु प्रबंधतंत्र के प्रति, साथ ही साथ सुविज्ञ एवं सुधी पाठकों के प्रति तथा अपनी रचनाएँ देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के प्रति हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए तथा अगले अंक में आपसे पुनः मिलने के आश्वासन के साथ आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ ।

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से पोर्ट ट्रस्ट का सहमत होना अनिवार्य नहीं है । पत्रिका में उल्लिखित नियम आदि के मूल पाठ को ही प्राधिकृत माना जायेगा ।

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ सं.
1	राष्ट्रीय पुस्तकालय का संक्षिप्त इतिहास	सुश्री यशस्विनी यादव	1
2	लाल सिग्नल अहंकार, राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा	श्री गोपाल शर्मा	2
3	बाजार का सूचकांक, परचम लहरा दो		2
4	प्रोत्साहन के लिए प्रशंसा, हँसने की बाते		2
5	कुछ ऐसा कर जाओ, यही जिंदगानी है	श्रीमती संगीता खिलवानी	3
6	झरोखा	श्रीमती आरती निहालानी	4
7	आसमान की चिड़ियाँ	श्रीमती विशाखा डी. टाकोदरा	4
8	देश के प्रति नौजवानों का फर्ज़	श्री प्रतीक एम. भावनानी	5
9	आशीर्वाद	श्रीमती रानी कुकसाल	7
10	बच्चों की परवरिश	श्री उमेशकुमार शर्मा	9
11	कमाया धन (लघु कथा)	श्रीमती सुनीता पंजवानी	10
12	शब्द एक महिमा	श्रीमती ज्योति एम. भावनानी	11
13	जीवन में समस्याऐं, सौ ऊँटों की कहानी	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	12
14	जीवन को सफल बनाने के कुछ नियम	श्रीमती गोपी के. पांडे	13
15	विश्व जनसंख्या दिवस	श्री शिवचरण मीना	14
16	हर स्त्री में एक शबरी	श्रीमती तन्वी उचवानी	15
17	मोबाइल फोन	श्रीमती गोपी के. पांडे	16
18	केम छे, आज नुं शिक्षण	श्री यश दवे	17
19	बाल मानस	सुश्री प्रियंका मोता	17
20	माँ	सुश्री जूही दादलानी	17
21	वक्त नहीं	श्री कैलाश उचवानी	18
22	हाय रे अंग्रेजी	श्री विशाल आर. टहिल्यानी	18
23	मैं एक शिक्षक हूँ	श्रीमती सपना आर. टहिल्यानी	18
24	माडी तारुं कंकु खर्युं	श्रीमती लता दवे	18
25	कार्यक्रमों की झलकियाँ	-	19
26	माँ की सीख	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	23
27	सिक्के के दो पहलु	सुश्री पर्ल उचवानी	23
28	वीर-भारत देश का सैनिक	श्री जयेश रामजी देवरिया	24
29	हे कृष्ण !!	श्रीमती विशाखा डी. टाकोदरा	25
30	चालो आज	श्री राजेन्द्र सोदागर	26
31	सुख का अर्थ	श्रीमती अंजु बी. आहुजा	26
32	मेरे सिंधी होने का गर्व है, मेरा देश	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	27
33	मैनें तो अब चलना सीख लिया	श्रीमती राजेश पी. सिंह	28
34	बुझो तो झाने	श्रीमती सुनीता पंजवानी	28
35	मेरा भारत	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	29
36	पिता	श्रीमती ज्योति एम. भावनानी	30
37	माथे की शिक्षा	श्री के. नेताजी	31
38	अहम्	श्रीमती तन्वी उचवानी	32

राष्ट्रीय पुस्तकालय का संक्षिप्त इतिहास

सुश्री यशस्विनी यादव
पुस्तकालय अध्यक्ष

राष्ट्रीय पुस्तकालय, भारत के चार अग्रणी निर्दिष्ट पुस्तकालयों में एक है, जो पुस्तक और समाचार पत्र वितरण (सार्वजनिक पुस्तकालय) अधिनियम, 1954 के तहत देश में कहीं भी प्रकाशित हर प्रकाश की एक प्रति प्राप्त करने के लिए अधिकृत है। पुस्तकालय भारत में प्रकाशित पठन सामग्री अथवा किसी भी भाषा में किसी कहीं भी मुद्रित, किसी भी विदेशी द्वारा भारत संबंधी लिखित सभी मुद्रित सामग्रियों का एक स्थायी भंडार है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय की उत्पति की जड़े पूर्व कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी से जुड़ी है, जो 19 वी शताब्दी के पूर्वार्ध में स्थापित हुआ। कलकता पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना काफी हद तक इंगलिशमैन के संपादक श्री जे.एच. स्टोकेलर की पहल पर की गई थी। पुस्तकालय को 21 मार्च, 1936 को डो. एफ.पी. स्ट्रांग, सिविल सर्जन के आवास में भूतल पर खोला गया था।

यह लॉर्ड कर्जन थे, जिन्होंने पहली बार जनता के उपयोग के लिए एक पुस्तकालय खोलने के विचार की कल्पना की थी। उनका ध्यान दो समृद्ध पुस्तकालयों पर गया - फलस्वरूप 1891 में सचिवालय पुस्तकालय और कलकता पब्लिक लाइब्रेरी को समामेलित करके इंपीरियल लाइब्रेरी का गठन किया। 1902 में इंपीरियल लाइब्रेरी (इंडेंटर्स वैलिडेशन) अधिनियम पारित किया गया था और पुनर्गठन इंपीरियल लाइब्रेरी को औपचारिक रूप से 30 जनवरी, 1903 को लॉर्ड कर्जन द्वारा 30 जनवरी 1908 को मेटकाफ होल में जनता के लिए खोल दिया गया। इसका उद्देश्य था कि संदर्भ पुस्तकालय होगा, विद्यार्थियों के अध्ययन की जगह ओर भारत के भविष्य के इतिहासकारों के लिए सामग्री का एक भंडार के रूप में कार्य करेगा, जिसमें यथासंभव किसी भी काल में भारत के बारे में लिखे गए हर सामग्री को देखा और पढ़ा जा सके।

आरंभ से ही प्रेस और पंजीकरण अधिनियम, 1867 के प्रावधानों के तहत सरकार द्वारा प्राप्त किसी की पुस्तक को बंगाल सरकार ने पुस्तकालय द्वारा निःशुल्क मांगने का विशेषाधिकार देने की पेशकश की। 1907 में जब लाइब्रेरी ओफ कांग्रेस के इंपीरियल लाइब्रेरी को 2,333 खंड प्राप्त हुए तब यह इसके संग्रह के विस्तार की दिशा में पहला कदम था जो विदेशी देशों के संस्थानो के साथ प्रकाशन विनिमय के माध्यम से लिया गया था। अप्रैल 1947 में इंपीरियल लाइब्रेरी के पास कुल 3,50,000 संस्करणों का संग्रह था।

भारत की स्वंतत्रता के बाद राष्टीय पुस्तकालय 1948 में 'इंपीरियल लाइब्रेरी (नाम का परिवर्तन) अधिनियम' द्वारा इंपीरियल लाइब्रेरी के स्थान पर अस्तित्व में आया। इसे 7वीं अनुसूची के अनुच्छेद 62 में राष्टीय महत्व के संस्थन का एक विशेष दर्जा दिया गया। भारत के संविधान की केन्द्रीय सूची और तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने 1 फरवरी 1953 को सार्वजनिक रूप से पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

असली सितारा

मिलता है डूबते हुए को तिनके का सहारा।
उभरता है तब वो लाचार, बेसहारा।
असफलता, कठिनाईयों ने तो है सबको हराया।
होता है उचित यही समय, देने का जवाब करारा।
यूँ तो दुनिया देखती है, हमारी अफलता का नजारा।
हमको चमकना है बनकर, दुनिया का अनमोल सितारा।

लाल सिग्नल अहंकार

जीवन रुपी यात्रा में कई ऐसी रुकावटें आती है, जो हमें मनचाही उन्नति करने से रोकती है । ये रुकावटें हमारे अपने स्वभाव की वजह से भी आ सकती है । इसी का परिणाम होता है कि हम नियोजित गंतव्य तक पहुंचने में विफल हो जाते है ।

जब तक हमारा अपना अहंकार हरे सिग्नल में परिवर्तित नहीं होता, हमारी प्रगति को गाड़ी कहीं बीच में ही अटकी रहती हैं अतः हम सभी को अपने हृदयों को टटोलना चाहिए और जाँच करना चाहिए कि उस पर कोई व्यर्थ चिंतन या नकारात्मक बातों के पत्थर या रोड़े तो नहीं पड़े हुए ।

बाजार का सूचकांक

1. सेंसेन्स एक ईन्डेक्स है जिसमें पूंजी बाजार के सर्वाधिक सक्रिय रुप से कारोबार वाले शेयर / स्टोक्स शामिल है ।
2. सभी सेयर / स्टोक्स की चाल समान नही होती एवं यह सुचकांक केवल बाजार की चाल (गति) का संकेतक है एवं निर्णय लेने में सहायक है ।
3. पूंजी बाजार में निवेश करने से पहले फेक्टर जैसे कि पी/ई अनुपात, उधीण की स्थिति एवं अर्थ व्यवस्था के अन्य कारकों पर भी विचार करें ।

प्रोत्साहन' के लिए प्रशंसा

प्रशंसा एक प्रकार की प्रोत्साहन है, एवं एक सन्देश है जो यह साफ-साफ बता देता है कि आप को किस रूप में पसंद किया जाता है ।

प्रशंसा करने का एवं प्रोत्साहित करने का अवसर जब भी मिले, उसे व्यक्ति करने से न चूका जाए । प्रोत्साहन-प्रशंसा शिक्षण प्रक्रिया का अति आवश्यक एवं व्यवहारिक अंग है ।

प्रशंसा द्वारा प्रोत्साहन एक ऐसा 'आयुष' है जिसके द्वारा व्यक्ति को सुगढ़ बनाकर उससे काम लिया जा सकता है ।

राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा

श्री गोपाल शर्मा
लेखा अधिकारी (रोकड़)
वित्त विभाग

भाषा को यदि सीमित रूप में देखा जाए तो यह केवल सम्प्रेषण का माध्यम मात्र होती है एवं यदि इसे राष्ट्र के संदर्भ में देखा जाए तो भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं बल्कि देश की संस्कृति की संवाहिका राष्ट्रीय पहचान एवं राष्ट्रीय सभ्यता का भी प्रतीक होती है ।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम यह भूल गए है, कि भाषा एवं साहित्य हमे संस्कार देते है, यदि हम चाहते है, कि हमारी अगली पीढ़ी भी उच्च संस्कार प्राप्त करे तो उन्हे भाषा एवं साहित्य के करीब ले जाना होगा ।

हिन्दी स्व-शासन एवं सुशासन का एक सशक्त माध्यम है, क्योंकि इस देश का आम नागरिक या तो क्षेत्रीय भाषा समझता है या फिर हिन्दी भाषा ।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि यदि हिन्दी को सही मायने में सरकारी दफ्तरों कि भाषा बनाना है तो इसे वरिष्ठ कार्यपालकों की भाषा बनाना होगा । जब शीर्ष स्तर से हिन्दी का प्रयोग शुरू होगा तो इसका असर अधीनस्थ कर्मियों पर भी पड़ेगा तभी हिन्दी मुख्य धारा में आ सकेगी ।

परचम लहरा दो

तिरंगा जिसका राष्ट्र ध्वज है
जन गण मन जिसका राष्ट्रगान
राजभाषा है हिन्दी जिसकी
ऐसा देश मेरा भारत महान
दिल से दिल को जोड़े हिन्दी
जन-जन की भाषा है हिन्दी
राष्ट्र-भावना का प्रतीक है हिन्दी
भारतीयता की पहचान है हिन्दी
परचम लहरे सारे विश्व में इसका
जगा दो ऐसा स्वाभिमान अपने में ।

हँसने की बाते

1. एक अंडा चार मंजिल से गिरा फिर भी ना टूटा । (भाग्य)
2. एक अंडा पाँच मंजिल से गिरा फिर भी ना टूटा । (अनुभव)
3. एक अंडा छः मंजिल से फिरा फिर भी ना टूटा । (आत्मविश्वास)
4. एक अंडा सात मंजिल से गिरकर टूट गया । (अति-आत्मविश्वास)
5. छोटा रामदास कपड़े पहने सौ पचाल । (प्याज)

कुछ ऐसा कर जाओ

श्रीमती संगीता खिलवानी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
हिन्दी प्रकोष्ठ

मेरी आंखो में ना देखो,
मेरे दिल में उतर जाओ,
जमाना जिसको ना माने,
आज कुछ ऐसा कर जाओ ।

चुरा लो सांस तुम मेरी,
मेरी हर नब्ज ले जाओ,
कोई सुने तो बस रो दे,
गीत कुछ ऐसा तुम गाओ ।

चले जाओ वहाँ पर तुम,
जहाँ मीलों तक कोई ना हो
फिर जब मन गवाही दे
मुझे भी साथ ले जाओ ।

छवि मन में बसाके तुम
मधुर अहसास भर जाओ,
जो मर कर भी ना मैं भूलुँ,
कुछ ऐसा खास कर जाओ ।

यही जिंदगानी है ।

यहाँ हर दिल में एक अधूरी सी कहानी है ।
तन्हाइयों में हर किसी की जिंदगी रूहानी है ।

बाहर से हर चेहरा हंसता हुआ नजर आएगा,
भीतर से टटोलोगे तो हर आंख में पानी है ।

कुछ यादें लिए बैठे है, कुछ किस्से लिए बैठे है,
यहां लोग एक दिल के कई हिस्से लिए बैठे है ।
बैठिए किसी के पास कुछ पल हमराह बनकर
तभी जान पाओगे, दर्द में कितनी सुनामी है ।

कोई 'दर्द' कह देता है तो किसी को कहना नही आता
कोई पत्थर बन जाता है किसी को चुप रहना नही आता
सबकी आदत औंरो को जानना है, और अपनी छुपानी है ।
चुप रहकर जिम्मेदारियां निभानी है, बस यही जिंदगानी है ।

'राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है' – महात्मा गांधी

झरोखा

श्रीमती आरती निहालानी
सहायक,
अभियंता (सिविल)

यादों के झरोखों से
रोज एक पन्ना तेरी यादों
का चला आता है ।

न चाहते हुए भी
मेरे मन के किसी कोने को तड़पा जाता है ।
तू थी तो सब कुछ था ।
तेरे जाते ही इतना सूनापन क्यूं आ गया ।
समझते थे जिन्हें हम अपना राजदार
अचानक क्यूं उन्हें लगने लगे हम बेकार

आज भी याद आता है वो छुट्टियों के पहले ही तेरा
राग आलापना, कभी आओगी
अच्छे से छुट्टी लेके आना ।।
खुद नासाज होने के बावजूद
हमारे आने की तैयारियों में खुद को झोंक देना ।

मुझे अच्छी लगने वाली
हर वो चीज़ का लेखाझोखा बनाना
याद से अब संजोके रखना,
तब तो शायद चिढ़ती थी मैं,
अब तेरी कमी मुझे बहुत खलती हैं ।

मेरी कामयाबियों पर हमेशा
सीना चौड़ा करनेवाली 'मां'
को आज भीनी कंखिया ढूंढती है
किसे बयां करूं मेरी उपलब्धियां
कोन मेरी पीठ थपथपायेगा
बोल ना 'मां'

अब तो सिर्फ अकेले में उन आंखो के
किनारों को पोंछ लेती हू ।
कहीं कोई मुझे कमजोर न समझे
यही तेरी सीख याद करती हु ।
बहुत कुछ सीखा 'मां' मैंने तुजसे
आज तेरी राह पर चल पड़ी हूं ।
मकाम जो चाहा तूने
आज उसे पाने की जिद में अड़ी हुई हूं ।

आसमान की चिड़ियाँ

श्रीमती विशाखा डी. टाकोदरा
वरिष्ठ लिपिक
यांत्रिक विभाग

आसमान से उतर के आई चिड़ियाँ,
कर गई मन में चहल-पहल,
कभी न रूकती,
न रखने देती मन स्थिर,
मन में उठा गई हलचल ।
रोम रोम में भर गई हरियाली
मन में फूटी नई तरंग,
आँखों से निकलकर उतरे दिल में,
ऐसे बनाये लाखों रंग ।
नन्हीं नाजुक आशा दिल में,
दीप जलाकर प्रगटी थी,
ना बुज पाएं ये कभी प्रभु,
यही अब करू बिनंती ।
न जाने उसके एहसास ने,
किये कितने अरमान पुरे,
बना गयी सबको अच्छे,
जो भी अब तक थे बुरे ।
चुग कर दाना उड़ गयी चिड़ियाँ,
फिर भी रख गयी सारे रंग,
नया उत्साह, नयी तरंग,
कुछ करने का नया जोश,
सफलता की नयी सुबह,
आई बनकर सुन्दर ओस ।

हरियाली को बढ़ाना है, प्लास्टिक को हटाना है ।

देश के प्रति नौजवानों का फर्ज़

श्री प्रतीक भावनानी
सुपुत्र श्रीमती ज्योति एम. भावनानी
प्रधान लिपिक,
सामान्य प्रशासन विभाग

राहुल सुबह सुबह कॉलेज जाने के लिए मोटर साइकिल पर निकला और सीधा मोहन के घर जा पहुंचा। राहुल और मोहन दोनों हमेशा साथ साथ ही कॉलेज जाते थे। एक दिन मोहन अपनी मोटरसाइकिल उठाता तो दूसरे दिन राहुल। इस तरह से दोनों के पेट्रोल का खर्चा आधा हो जाता था।

आज गणतंत्र दिवस था और दोनों को झंडे सलामी के कार्यक्रम में समय पर कोलेज पहुंचना था क्यों कि राहुल को मेरा हिन्दुस्तान, सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत आयोजित होने वाली भाषण की प्रतियोगिता के लिए नामांकित किया गया था। मोहन जो रात को देर से सोया था, उसे उठने में देर हो गई इसलिए उसने तैयार होने में थोड़ी देर लगा दी। राहुल कब से होर्न पे होर्न बजाए जा रहा था। आखिर मोहन दौड़ता हुआ घर से निकला और राहुल के पीछे मोटरसाइकिल पर बैठ गया।

चूंकि उनको पहले से ही देर हो चुकी थी, इसलिए राहुल ने अपनी गाडी की स्पीड थोड़ी तेज़ कर दी। सुबह सुबह रास्ता खाली था इसलिए उसे गाड़ी तेज चलाने में कोई धिक्कत नहीं आ रही थी। गाड़ी चलाते वक्त अचानक से उसके मोबाइल की घंटी बजी। उसे लगा कि शायद कोलेज से ही फोन आया होगा, यह सोचकर उसने गाड़ी की गति थोड़ी कम करते हुए मोबाइल फोन उठाया और गाडी चलाते हुए ही फोन पर बात करने लगा। फोन वाकई में उसके कोलेज के दोस्तों का ही था, जो उससे पूछ रहे थे कि वह आखिर कब तक कोलेज पहुंचेगा क्योंकि गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम चालू होने ही वाला था। राहुल ने बताया कि वह और मोहन थोड़ी देर में पहुंचने ही वाले हैं। उनसे बात करते करते अचानक से राहुल की गाड़ी के सामने सुरह को मोर्निंग वॉक करने वाला एक दंपति आ गया। चूंकि राहुल का ध्यान फोन पे बात करने में लगा हुआ था। इसलिए उसने इस दंपति को पहले नहीं देखा। अचानक से उनको गाड़ी के सामने देखकर वह हड़बड़ा गया और उस दंपति को बचाने के चक्कर में अपनी गाड़ी को साइड में ले गया जिससे उनकी गाडी सीध डिवाइडर से टकरा गई। राहुल और मोहन दोनों नीचे सड़क पर गिर पड़े। दोनों को हेलमेट भी पहना हुआ नहीं था। ये तो शुक्र था कि उनकी गाड़ी की गति ज्यादा तेज़ नहीं थी इसलिए उनकी गाड़ी को मात्र डिवाइडर की टक्कर ही लगी थी और कोई गाड़ी भी उनकी गाड़ी के पीछे नही थी क्योंकि सुबह का समय था इसलिए मार्ग पर ज्यादा वाहन भी नहीं थे इसलिए दोनों को कोई खास चोट नहीं लगी। दोनों एक दूसरे को संभालते हुए उठ खड़े हुए और कपड़े झाड़ते हुए जैसे ही मोटरसाइकिल उठाने ले तब दो दंपति जिनको बचाने की कोशिश में वे डिवाइडर से जाकर टकराए थे उन के पास आकर उनका शुक्रिया अदा करने लगे और उन्हें कहने लगे,'बच्चो, तुम तो अपने परिवार की और इस देश की धरोहर हो। इस देश का भविष्य हो। तुम सलामत रहोगे तभी ये देश सलामत रहेगा। इसलिए जरूरी है कि तुम अपनी सुरक्षा का ध्यान रखो। घर से बाहर निकलो तो जल्दबाज़ी न करो। दुपहिया में निकलते हो तो हेलमेट पहनकर ही निकलो और गाड़ी चलाते वक्त मोबाइल पर तो बिलकुल ही बात न करो और बात करनी ही हो तो अपनी गाड़ी को सड़क के किनारे रोककर आराम से बात करो। ये तो अच्छा था जो आज तुम्हारी गाड़ी के पीछे और कोई गाडी नहीं थी और तुम्हारी की गति बहुत ज्यादा नहीं थी इसलिए तुम्हें ज्यादा चोट नहीं लगी, वर्ना पता नहीं आज क्या हो जाता। तुम्हारे परिवार को तुमसे बहुत ही प्यार है। उनका तुम सपना हो। तुम्हारे मां बाप को तुमसे कई उम्मींदे हैं जो तुम्हें पूरी कहानी हैं। जिसके लिए तुम्हें सुरक्षित रहना ही है। आइंदा से बच्चो ध्यान रखना।' इतना कहकर वो दंपति आगे चला गया।

राहुल और मोहन दोनों कोलेज पहुंच गए। वहां का कार्यक्रम कुछ देर पहले ही चालु हुआ था। कुछ देर के बाद भाषण की प्रतियोगिता का सिलसिला चालु हुआ। भाषण का विषय था, 'देश के प्रति नौजवानों का फर्ज'। राहुल की जब बारी आई तो

उसने जो भाषण की तैयार की थी उसमें वो सब भी जोड़कर उसने बताया जो आस के हादसे के बाद उस दंपति ने उसे समझाया था। उसने बताया कि किस तरह से हेलमेट पहनकर, मार्ग पर धीमी गति से वाहन चलाकर तथा गाड़ी चलाते वक्त मोबाइल पर बात न करके अपने देश के लिए, अपने देश के विकास के लिए नौजवान खुद को सुरक्षित रख सकते हैं। क्यों कि आज के नौजवान ही आने वाले कल के निर्माता हैं। इसके अलावा उसने यह भी बताया कि सच्चा देश प्रेम अर्थात मन में सच्चाई और ईमानदारी तथा अनेको मानवीय मूल्यों का विकास। उसने एक एक मानवीय मूल्य के महत्व को बताते हुए नौजवानों को सच्चाई की राह पर चलने की अपील की। उसने देश की मज़बूती के लिए, एकता और भाईचारे को अपनाने पर ज़ोर ढाला। अपने देश पर फख्र करने एवं उसकी सुरक्षा एवं विकास के लिए स्वदेशी को अपनाने कि हिदायत की उसने कहा कि देश की संपति हम सब की संपति है इसलिए उसकी रक्षा करना हर नौजवान का और हर हिंदुस्तानी का फर्ज है। प्राकृतिक एवं रसायनिक संसाधनों के उचित रुप से उपयोग करने जोर ढाला जैसे उनका कम से कम अपव्यय हो। पेट्रोल की बचत हेतु एक ही जगह पर और एक ही दिशा में जाने वाले अनेंको वाहनो की जगह पर आपसी तालमेल से कम वाहनों के उपयोग पर भी उसने रोशनी डाली। नशीली चीज़ो के सेवन और उससे होने वाले नुकसानों के बारे में उसने सबको बताया कि किस तरह से नशली चीज़ं इंसान को खास कर के नौजवानों को अंदर से खोखला करती जाती हैं। इसलिए उसने नौजवानों को नशीली चीज़ों से दूर रहने तेहु सचेत किया। अंत मे समय की पाबंदी और अनुशासन का देश के विकास में क्या योगदान है और किस तरह से नौजवानों को इसका अमल करना चाहिए यह समझाते हुए उसने चार पंक्तियां

आओ नौजवानो अपने मन में जागृति लाएं,
अपने हिंदुस्तान की प्रगति में अपना हाथ बंटाए।
अपने हिंदुस्तान को हम सब अपना जानें,
अपने हिंदुस्तान के प्रति अपना फर्ज़ पहचााने।

कहते हूए और 'जय हिंद' का नारा लगाते हुए अपने भाषण को विराम दिया। उसके भाषण के समाप्त होते ही वातावरण में तालियों की गूंज गूंजने लगी।

आशीर्वाद

श्रीमती रानी सुरेश कुकसाल
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग

जब मृत्यु का समय निकट आया तो पिता ने अपने एकमात्र पुत्र धर्मपाल को बुलाकर कहा कि, 'बेटा मेरे पास धन-संपति नहीं है कि मैं तुम्हें विरासत मैं दूं। पर मैंनें जीवनभर सच्चाई और प्रामाणिकता से काम किया है।'

तो मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि, तुम जीवन में बहुत सुखी रहोगे और धूल को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जायेगी।

बेटे ने सिर झुकाकर पिताजी के पैर छुए। पिता ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और संतोष से अपने प्राण त्याग कर दिए।

अब घर का खर्च बेटे धर्मपाल को संभालना था। उसने एक छोटी सी ठेला गाड़ी पर अपना व्यापार शुरू किया।

धीरे धीरे व्यापार बढ़ने लगा। एक छोटी सी दुकान ले ली। व्यापार और बढ़ा।

अब नगर के संपन्न लोगों में उसकी गिनती होने लगी। उसको विश्वास था कि यह सब मेरे पिता के आशीर्वाद का ही फल है।

क्योंकि, उन्होंने जीवन में दुःख उठाया, पर कभी धैर्य न हीं छोड़ा, श्रद्धा नही छोडी, प्रामाणिकता नहीं छोडी इसलिए उनकी वाणी में बल था। और उनके आशीर्वाद फलीभूत हुए। और मैं सुखी हुआ। उसके मुंह से बारबार यह बात निकलती थी।

एक दिन एक मित्र ने पूछा : तुम्हारे पिता में इतना बल था, तो वह स्वयं संपन्न क्यों नहीं हुए ? सुखी क्यों नहीं हुए ? धर्मपाल ने कहा : मैं पिता की ताकत की बात नहीं कर रहा हूं। मैं उनके आशीर्वाद की ताकत की बात कर रहा हूं।

इस प्रकार वह बारबार अपने पिता के आशीर्वाद की बात करता, तो लोगों ने उसका नाम ही रख दिया बाप का आशीर्वाद ! धर्मपाल को इससे बुरा नहीं लगता, वह कहता कि मैं अपने पिता के आशीर्वाद के काबिल निकलुं, यही चाहता हूँ।

ऐसा करते हुए कई साल बीत गए। वह विदेशों में व्यापार करने लगा। जहां भी व्यापार करता, उससे बहुत लाभ होता। एक बार उसके मन में आया, कि मुझे लाभ ही लाभ होता है !! तो मैं एक बार नुकसान का अनुभव करूं।

तो उसने अपने एक मित्र से पूछा, कि ऐसा व्यापार बताओ कि जिसमें मुझे नुकसान हो।

मित्र को लगा कि इसको अपनी सफलता का और पैसों का घमंड आ गया है। इसका घमंड दूर करने के लिए इसको ऐसा धंधा बताऊं कि इसको नुकसान ही नुकसान हो।

तो उसने उसको बताया कि तुम भारत में लौंग खरीदो और जहाज में भरकर अफ्रीका के जंजीबार में जाकर बेचो। धर्मपाल को यह बात ठीक लगी।

जंजीबार तो लौंग का देश है। वहां से लौंग भारत में लाते हैं और यहां 10-12 गुना भाव पर बेचते हैं।

भारत में खरीद करके जंजीबार में बेचें, तो साफ नुकसान सामने दिख रहा है। परंतु धर्मपाल ने तय किया कि मैं भारत में लौंग खरीद कर, जंजीबार खुद लेकर जाऊंया। देखूं कि पिता के आाशीर्वाद कितना साथ देते हैं।

नुकसान का अनुभव लेने के लिए उसने भारत में लौंग खरीदे और जहाज में भरकर खुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुंचा। जंजीबार के सुल्तान का राज्य था। धर्मपाल जहाज से उतरकर के और लंबे रेतीले रास्ते पर जा रहा था। वहां के व्यापारियों से मिलने को।

नुकसान का अनुभव लेने के लिए उसने भारत में लौंग खरीदे और जहाज में भरकर खुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुंचा। जंजीबार में सुल्तान का राज्य था। धर्मपाल जहाज से उतरकर के और लंबे रेतीले रास्ते पर जा रहा था। वहां के व्यापारियों से मिलने को।

उसे सामने से सुल्तान जैसा व्यक्ति पैदल सिपाहियों के साथ आता हुआ दिखाई दिया।

उसने किसी से पूछा कि, यह कौन है ?

उन्होंने कहाः यह सुल्तान हैं।

सुल्तान ने उसको सामने देखकर उसका परिचय पूछा। उसने कहा : मैं भारत के गुजरात के खंभात का व्यापार हूं। और

यहां पर व्यापार करने आया हूं ।

सुल्तान ने उसको व्यापारी समझ कर उसका आदर किया और उससे बात करने लगा ।

धर्मपाल ने देखा कि सुल्तान के साथ सैंकड़ों सिपाही हैं । परंतु उनके हाथ में तलवार, बंदूक आदि कुछ भी न होकर बड़ी-बड़ी छलनियां है ।

उसको आश्चर्य हुआ । उसने विनम्रता पूर्वक सुल्तान से पूछा : आपके सैनिक इतनी छलनी लेकर के क्यों जा रहे हैं ।

सुल्तान ने हंसकर कहा : बात यह है, कि आज सवेरे मैं समुद्र तट पर घूमने आया था । तब मेरी उंगली में से एक अंगूठी यहां कहीं निकल कर गिर गई ।

अब रेत में अंगूठी कहां गिरी, पता नहीं । तो इसलिए मैं इन सैनिकों को साथ लेकर आया हूं । यह रेत छानकर मेरी अंगूठी उसमें से तलाश करेंगे ।

धर्मपाल ने कहा : अंगूठी बहुत महंगी होगी ।

सुल्तान ने कहा : नहीं ! उससे बहुत अधिक कीमत वाली अनगिनत अंगूठी मेरे पास हैं । पर वह अंगूठी एक फकीर का आशीर्वाद है ।

मैं मानता हूं कि मेरी सल्तनत इतनी मजबूत और सुखी उस फकीर से आशीर्वाद से है । इसलिए मेरे मन में उस अंगूठी का मूल्य सल्तनत से भी ज्यादा है ।

इतना कह कर के सुल्तान ने फिर पूछा : बोलो सेठ, आप क्या माल ले कर आये हो ।

धर्मपाल ने कहा कि : लौंग !

सुल्तान के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । यह तो लौंय का दी देश है सेठ । यहां लौंग बेचने आये हो ? किसने आपको ऐसी सलाह दी ।

जरूर वह कोई आपका दुश्मन होगा । यहां तो एक पैसे में मुट्ठी भर लौंग मिलते है । यहां लौंग को कौन खरीदेगा ? और तुम क्या कमाओगे ?

धर्मपाल ने कहा : मुझे यही देखना है, कि यहां भी मुनाफा होता है या नहीं ।

मेरे पिता के आशीर्वाद से आज तक मैंने जो धंधा किया, उसमें मुनाफा ही मुनाफा हुआ । तो अब मैं देखना चाहता हूं कि उनके आशीर्वाद यहां भी फलते हैं या नहीं ।

सुल्तान ने पूछा : पिता के आशीर्वाद ? इसका क्या मतलब ?

धर्मपाल ने कहा : मेरे पिता सारे जीवन ईमानदारी और प्रामाणिकता से काम करते रहे । परंतु धन नहीं कमा सकें ।

उन्होंने मरते समय मुझे भगवान का नाम लेकर मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिए थे, कि तेरे हाथ में धूल भी सोना बन जाएगी ।

ऐसा बोलते-बोलते धर्मपाल नीचे झुका और जमीन की रेत से एक मुट्ठी भरी और सम्राट सुल्तान के सामने मुट्ठी खोलकर उंगलियों के बीच में से रत नीचे गिराई तो....

धर्मपाल और सुल्तान दोनों का आश्चर्य का पार नहीं रहा । उसके हाथ में एक हीरेजड़ित अंगूठी थी । यह वही सुल्तान की गुमी हुई अंगूठी थी ।

अंगूठी देखकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हो गया । बोला : वाह खुदा आप की करामत का पार नहीं । आप पिता के आशीर्वाद को सच्चा करते हो ।

धर्मपाल ने कहा : आप 100 वर्ष तक जीवित रहो और प्रजा का अच्छी तरह से पालन करो । प्रजा सुखी रहे । इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए ।

सुल्तान और अधिक प्रसन्न हो गया । उसने कहा : सेठ तुम्हारा सारा माल में आज खरीदता हूं और तुम्हारी मुंह मांगी कीमत दूंगा ।

इस कहानी से शिक्षा मिलती है, कि पिता के आशीर्वाद हों, तो दुनिया की कोई ताकत कहीं भी तुम्हें पराजित नहीं होने देगी ।

पिता और माता की सेता का फल निश्चित रूप से मिलता है । आशीर्वाद जैसी और कोई संपति नहीं ।

बालक के मन को जानने वाली मां और भविष्य को संवारने वाले पिता यही दुनिया के दो महान ज्योतिषी है ।

अपने बुजुर्गों का सम्मान करें । यही भगवान की सबसे बड़ी सेवा है ।

बच्चों की परवरिश

श्री उमेशकुमार शर्मा
फार्मासिस्ट,
गोपालपुरी अस्पताल

जंगल के राजा ने ऐलान कर दिया कि अब आज के बाद कोई अनपढ़ न रहेगा। हर पशु को अपना बच्चा स्कूल भेजना होगा। राजा साहब का स्कूल पढ़ा-लिखाकर सबको सर्टिफिकेट बंटेगा।

सब बच्चे गले स्कूल। हाथी का बच्चा भी आया, शेर का भी, बंदर भी आया और मछली भी, खरगोश भी आया तो कछुआ भी, ऊँट भी और जिराफ भी।

पहली बार युनिट टेस्ट एग्जाम हुआ तो हाथी का बच्चा फेल।

'किसी विषय में फेल हो गया जी ?'

'पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गया, हाथी का बच्चा।'

'अब का करें ?'

'ट्रयुशन दिलवाओं, कोचिंग में भेजो'

अब हाथी की जिन्दगी का एक ही मकसद था कि हमारे बच्चे को पेड़ पर चढ़ने में टोप कराना है।

किसी तरह साल बीता। फाइनल रिजल्ट आया तो हाथी, ऊँट, जिराफ सब फेल हो गए। बंदर की औलाद प्रथम आयी।

प्रिंसिपल ने स्टेज पर बुलाकर मैडल दिया। बंदर ने उछल-उछल के कलाबाजियाँ दिखाकर गुलाटियाँ मार कर अपनी खुशी का इजहार किया।

उधर अपमानित महसूस कर रहे हाथी, ऊँट और जिराफ ने अपने-अपने बच्चों को कूट दिये।

नालायकों, इतने महेंगे स्कूल में पढ़ाते हैं तुमको। ट्रयुशन-कोचिंग सब लगवाए हैं। फिर भी आज तक तुम पेड़ पर चढ़ना नहीं सीखे। सीखो, बंदर के बच्चे से सीखो कुछ, पढ़ाई पर ध्यान दो।

फेल हालाकिं मछली भी हुई थी। बेशक तैराकी में फर्स्ट आयी थी पर बाकी विषय मैं तो फेल ही थी।

मास्टरनी बोली, 'आपकी बेटी के साथ अटेंडेस की समस्या है।'

मछली ने बेठी को आँखे दिखाई।

बेटी ने समझाने की कोशिश की कि,'माँ, मेरा दम घुटता है इस स्कूल में। मैं यहाँ सांस ही नहीं ले पति। मुझे नहीं पढ़ना इस स्कूल में। हमारा स्कूल तो तालाब में होना चाहिये न ?

नहीं, ये राजा का स्कूल है। तालाब वाले स्कूल में भेजकर मुझे अपनी बेइज्जती नहीं करानी। समाज में कुछ इज्जत है मेरी। तुमको इसी स्कूल में पढ़ना है। पढ़ाई पर ध्यान दो।

हाथी, ऊँट और जिराफ अपने-अपने फेल बच्चों को पीटते हुए ले जा रहे थे।

रास्ते में बूढ़े बरगद ने पूछा,'क्यों पीट रहे हो, बच्चों को ?

जिराफ बोला,'पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गए ?'

बूढ़ा बरगद सबसे पते की बात बोला,'अपनी सुंड उठाओ और सबसे ऊँचा फल तोड लो।

जिराफ तुम अपनी लंबी गर्दन उठाओ और सबसे ऊँचे पते तोड़-तोड़ कर खाओ।

ऊँट भी गर्दन लंबी करके फल पते खाने लगा।

हाथी के बच्चे को क्यों चढ़ाना चाहते हो पेड़ पर ?

मछली को तालाब में ही सीखने दो न ?

हाथी के बच्चे को पेड़ पर चढ़ाकर अपमानित मत करो । जबरदस्ती उसके ऊपर फेलियर का ठप्पा मत लगाओ । ठीक है, बंदर का उत्साहवर्धन करो पर शेष 34 बच्चों का नालायक, कामचोर, लापरवाह, फेल घोषित मत करो । मछली बेशक़ पेड़ पर न चढ़ पाये पर एक दिन वो पूरा समंदर नाप देगी ।

अपने बच्चों की क्षमताओं व प्रतिभा की कद्र करें, चाहे वह पढ़ाई, खेल, नाच, गाने, कला, अभिनय, व्यवसाय, खेती, बागबानी, मकेनिकल, किसी भी क्षेत्र में हो और उन्हें उसी दिशा में अच्छा करने दें । जरूरी नहीं कि सभी बच्चे पढ़ने में ही अव्वल हो बस जरूरत हैं उनमें अच्छे संस्कार व नैतिक मूल्यों की जिससे बच्चे गलत रास्ते न चुने ।

कमाया धन (एक लघु कथा)

श्रीमती सुनीता पंजवानी
कनिष्ठ अभियंता
अभियांत्रिकी विभाग

बनारस शहर का छोटा सा इलाका जहां अमीरचंद जी रहते थे । करीब 65 साल की उम्र रही होगी । शान औ-शौकत तो उनकी देखते ही बनती थी । बड़ी-बड़ी गाड़ियां, नौकर-चाकर, बड़ा-सा घर, क्या नहीं था उनके पास । एक दिन वह अपनी बड़ी-सी कार से अपने कार्यालय की तरफ जा रहे थे । हर रोज की तरह उनकी कार में भजन चल रहे थे ....

'क्या लेकर आया रे बंदे, क्या लेकर जाएगा ।
दो दिन की जिंदगी में दो दिन का मेला ।'

एकाएक उनका ध्यान इस भजन की पंक्तियों की ओर जाता है और वह सोचने लगते हैं,'अब मैं उम्र के उस पड़ाव पर आ गया हूँ, जहाँ पर कभी भी ऊपर वाले का बुलावा अंतिमयात्रा के लिये आ सकता है, फि में अपनी कमाई इतनी सारी धन-दौलत का क्या करूंगा ।

एकाएक वह बहुत ही चिंतित हो जाते हैं । और तुरंत अपने ड्राइवर को गाड़ी वापर घर की ओर लेने के लिए कहते हैं । घर जाकर वह तुरंत ही अपने सभी करीबी रिश्तेदारों, दोस्तों और अपने वकील आदि से बैठक रखते हैं । सभी से वह एक ही सवाल का जवाब मांगते हैं कि कोई मुझे मेरे मरने के बाद मेरा सारा साम्राज्य अपने साथ अंतिमयात्रा पर ले जाने का रास्ता बताए । पर किसी भी व्यक्ति के पास इस सवाल का जवाब नहीं था । वह बार बार इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए बैठक बुलाते हैं, परंतु इसका जवाब कोई भी नहीं दे पाता । आखिरकार वे यह घोषित करते हैं कि, जो कोई भी मुझे मेरे प्रश्न का जवाब देगा उसे मैं एक करोड़ रुपए की धनराशि पुरस्कार में दुंगा ।

तभी एक व्यक्ति सामने आता है और उनसे कहता है कि, हां मैं तुम्हें इसका उत्तर दे सकता हूँ, परंतु पहले तुम्हें मेरे कुछ सवालों का जवाब देना पड़ेगा । अमीरचंद जी तुरंत मान जाते हैं और कहते हैं पूछो तुम्हें जो भी पूछना है । वह व्यक्ति पहला सवाल करता हैं । आप अपने धन का उपयोग कैसे करते हैं ? तब अमीरचंद जी जवाब देते हैं कि मैं जो भी कमाता हूं, विदेश जाकर खर्च कर आता हूँ । जैसे दुबई जाता हूँ तो रुपयों को दिराह्म में कन्वर्ट करता हूँ और वहाँ जाकर ऐशोआराम करता हूँ । कभी अमेरिका चला जाता हूँ, रुपयों को डॉलर में बदलता हूँ, और आराम से जिंदगी जी कर आता हूँ, कभी-कभी लंदन भी चला जाता हूँ, रुपयों को पाउंड में बदलता हूँ, और वहाँ पर अपना मजा करता हूँ ।

लेकिन इस प्रश्न का मेरे प्रश्न से क्या लेना, तब वह व्यक्ति हंसकर, अमीरचंद को जवाब देता है कि जिस तरह आप विदेश जाने से पहले अपने धन को विदेशी मुद्राओं में बदलते है उसी तरह आपको अंतिम यात्रा के लिए अपने धन को सत्कर्मों में बदलना पड़ेगा, वही आपकी मृत्यु के बाद आपके साथ चलेगा ।

उस आदमी की बात सुनकर अमीरचंद की आंखे खुल जाती है । वह उत्तर पाकर संतुष्ट होते हैं और उस व्यक्ति को पुरस्कार की धनराशि देकर अपना बाकी का जीवन सत्कर्म इकट्ठे करने में लगा लेते हैं ।

'जीवन में किया हुआ सत्कर्म ही हमारी असली पूंजी है... जो न सिर्फ इस देह के साथ... परंतु हमारी आत्मा से भी जुड़ जाती है .... और हमको जन्म जन्मांतर तक साथ देती है'

शब्द की महिमा

श्रीमती ज्योति एम. भावनानी
प्रधान लिपिक,
सामान्य प्रशासन विभाग

शब्द की महिमा है,
बड़ी ही महान ।
इसी से चलता है,
सारा ये जहान ।

शब्द धर्म है, भाषा है,
और है संस्कृति का ज्ञान ।
शब्द इतिहास है, भूगोल है,
और है विज्ञान ।

शब्द गीता है, बाईबल है,
और है कुरान ।
इसी में ही छुपी हुई है,
हम सबकी पहचान ।

शब्द में गीत है, संगीत है,
और है राष्ट्गान ।
शब्द लेख है, कविता है,
और है खेल कूद का सामान ।

शब्द व्यापार है, राजनीति है,
औश्र है उत्थान,
शब्द समाचार है, इश्तहार है,
और है खेल कूद का सामान ।

शब्द डॉक्टर है, वकील है,
और है किसान ।
शब्द नेता है, अभिनेता है,
और है खेल कूद का सामान ।

शब्द डोक्टर है, वकील है,
और है किसान ।
शब्द नेता है, अभिनेता है,
और है विद्धान ।

शब्द नदी है, पर्वत है,
और है कुदरत का बखूबी बयान ।

शब्द जल है, वायु है,
और है तूफान ।
शब्द भूतकाल है, भविष्य है,
और है वर्तमान ।
शब्द धरती है, चांद सितारा है,
और है आसमान ।

शब्द ज्ञानी है, अज्ञानी है,
और है नादान ।
शब्द अमीर है, गरीब है,
और है बलवान ।

शब्द माँ है, पिता है,
और है संतान ।
शब्द रिश्ता है, नाता है,
और है मेहमान ।

शब्द फल है, खाना है,
और है मिष्ठान ।
शब्द खट्टा है, मीठा है,
और है पकवान ।

शब्द इकरार है, इज़हार है,
और है एहसान,
शब्द प्यार है, दुलार है,
और है बलिदान ।

शब्द दुआ है, बददुआ है,
और है वरदान,
शब्द प्रश्न है, उल्जन है,
और है समाधान ।

शब्द आस है, विश्वास है,
और है अरमान ।
शब्द साथी है, सारथी है,
और है मेहरबान ।

शब्द अधिकार है, फ़र्ज है,
और है गुनाहों का चालान ।
शब्द कायदा है, कानून है,
और है इंसा का फरमान ।
शब्द धरोहर है, पूंजी है,
और है माँ सरस्वती का वरदान ।
शब्द साहस है, प्रयास है,
और है मेहनत का निशान ।

शब्द गर्व है, अभिमान है,
और है सन्मान ।
शब्द गम है, खुशी है,
और है मुस्कान ।

शब्द भक्ति है, देशभक्ति है,
और है सद्गुणें का गुणगान ।
शब्द अल्लाह है, ईशु है,
और है भगवान ।

शब्द जीवन है, मृत्यु है,
और है शमशान ।
शब्द भोग है, लोभ है,
और है शान और मान ।

जीवन में समस्याएँ, सो ऊँटों की कहानी

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार विभाग

राजस्थान के एक सुदूर जिले में एक व्यक्ति रहता था। जो हमेशा किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था और अपने जीवन से खुश नहीं था।

एक दिन उसे पता चला कि एक संत अपने काफिले के साथ उसके शहर आए हैं। उस आदमी ने उन संत के पास जाने का फैसला किया। शाम को वह उनके पास गया और कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद संत से उसकी मुलाकात हुई। उसने संत से कहा,'बाबा, मैं अपने जीवन से बहुत दुःखी हूँ। मैं हर समय समस्या से घिरा रहता हूँ। ओफिस का तनाव, स्वास्थ्य की समस्या, घर की समस्याएं। कृपया मुझे कोइ रास्ता बताएं जिससे मेरी सारी समस्याएं समाप्त हो जाए और मैं एक शांतिपूर्ण और सुखी जीवन जी सकूं।'

संत मुस्कुराए और बोले,'बेटा, कल सुबह मैं तुम्हें एक उपाय दूंगा। लेकिन इस बीच क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम कर सकते हो ?'

आदमी मान गया। संत ने आगे कहा,'हमारे काफिले में सो ऊँट हैं। मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम उनकी देखभाल करो। जब सभी सौ ऊँट बैठ जाएं, तो तुम भी सो जाना।' यह कहकर संत अपने तंबू में चले गए और वह आदमी रात को ऊँटो की देखभाल करने चला गया।

अगली सुबह संत आदमी के पास गए और पूछा,'बेटा, क्या कल रात तुम्हें अच्छी नींद आई ?'

आदमी उदास हो गया और उसने उत्तर दिया,'बाबा, मैं एक पल के लिए भी सो नहीं पाया। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन एक बार में सभी ऊँट एक साथ नहीं बैठ सके। कुछ ऊँट खुद बैठ जाते हैं लेकिन उनमें से कुछ मेरी लाख कोशिश करने पर भी नहीं बैठते और अगर उनमें से एक बैठ भी जाता तो दूसरा ऊँट उठ जाता। संत मुस्कुराए और बोले,'अगर में गलत नहीं हूँ तो कल रात तुम्हारे साथ शायद यह हुआ था :-

1. कईं ऊँट थे जो रात को खुद बैठे रहे थे।
2. कईं ऊँट तुम्हारे प्रयास से बैठ गए।
3. कुछ ऊँट तुम्हारी कोशिश के बाद भी नहीं बैठे। और फिर बाद में तुमने पाया कि कुछ समय के साथ वे खुद ही बैठ गए।

आदमी ने जवाब दिया,'हाँ ! महात्मा जी, बिल्कुल यही हुआ था। संत ने अपनी बात जारी करते हुए आगे कहे,'अब क्या कुछ तुम्हारी समझ में आया ?'
हमारे जीवन में समस्याएँ भी कुछ ऐसी ही होती हैं...

1. कुछ अपने आप हल हो जाती हैं।
2. कुछ तुम्हारे प्रयासों से सुलझ जाती हैं।
3. कुछ तुम्हारे प्रयासों से भी नहीं सुलझती। इन समस्याओं को समय पर छोड देना चाहिए। वे सही समय पर अपने आप हल हो जाएंगी।

पिछली रात तुमने अनुभव किया कि तुम्हारी पूरी कोशिशों के बाद भी, एक ही समय में सभी ऊँट बैठे नहीं मिल सके। तुमने एक ऊँट को बिठाया तो दूसरा ऊँट कहीं और खड़ा हो गया।

उसी तरह यदि तुम एक समस्या का समाधान करते हो तो तुमको वहां दूसरी समस्या खड़ी दिखाई देगी। यही जीवन है। समस्याएँ जीवन का हिस्सा हैं, कभी कम तो कभी बहुत अधिक। सुख-दुःख तो केवल भ्रम है। समस्याएं जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि तुम उनके बारे में सोचते ही रहो।

तुम समस्याओं को एक तरफ रख कर आगे बढ़ते रहो बस। जीवन के उद्देश्य (आत्म-साक्षात्कार) की ओर बढ़ना सीखो।

जीवन को सफल बनाने के कुछ नियम

श्रीमती गोपी के. पांडे
वरिष्ठ लिपिक
मुख्य अभियंता विभाग

1. लगन :

यदि किसी व्यक्ति में लगन हो तो व्यक्ति अपनी क्षमता से 100 गुना काम कर सकता है । सीहित्य लिखने से लेकर बड़े-बड़े संगठन खड़े करने से लेकर क्रांति लाने में इस लगन से काम किया है ।

2. श्रम :

व्यक्ति को हंमेशा श्रम/परिश्रम करना चाहिए । श्रम नहीं करने वाले व्यक्ति को एक दिन खुद के खाने के लिए भी भीख मांगनी पडती है ।श्रम करने वाले व्यक्ति को कभी भी किसी चीज के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं होना पडता है ।

3. दृष्टिकोण :

व्यक्ति स्वयं ही अपना मित्र और शत्रु दोनों है । हमें अपनी असफलताओं से कभी दुखी नहीं होना चाहिए बार-बार प्रयास करते हुए आगे बढ़ना चाहिए । एक दिन सफलता जरुर मिलेगी । 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' अर्थात निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी बन जाता है । व्यक्ति को कभी भी अपने कष्टों या विपत्तियों के लिए दूसरों पर दोषारोपण नहीं करना चाहिए । वास्तव में इस संसार में किसी के पास इतनी शक्ति नहीं है कि वह किसी दूसरे को दुख पहुंचा सके या किसी का बुरा कर सके । इन सब परिस्थितियों को हमने खुद उत्पन्न किया है । सभी भली या बुरी स्थितियां हमने खुद उत्पन्न की है । जैसे ही हम अपना दृष्टिकोण बदलेंगे तो सारी समस्या दूर हो जाएगी । जो भी हमारे आसपास घटित हो रहा है हमारा ही करा धरा है इसीलिए किसीको इसका जिम्मेदार नहीं समझना चाहिए ।

4. संतोष :

हमें संतोष भरा जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए । इस संसार चक्र में जो भी उतार-चढाव व्यक्ति के जीवन में आता है उसे उसके अनुसार अपने मन की स्थिति को बदलने की कोशिश करनी चाहिए । जब व्यक्ति को सुख, समृध्दि, सफलता, पद, प्रतिष्ठा मिले तो उसे अहंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि संसार चक्र कब इन सब चीजों से आपको बाहर कर देगा उसका पता नहीं । यदि व्यक्ति हर स्थिति में संतोषपूर्वक जीवन जीता है तो उसे बदली हुई परिस्थितियों के समय दुखी अथवा निराश नहीं होना पड़ेगा । व्यक्ति को हंमेशा अपने आपको परमात्मा का भेजा हुआ एक कार्यकर्ता समझना चाहिए ना कि आधिपति ।

5. लगाव :

सड़क पर चलते हुए कोई भी अपरिचित व्यक्ति हम से बुरा व्यवहार करता है तो व हम आसानी से भूल जाते हैं पर अगर अपने ही परिवार का कोई सदस्य बुरा व्यवहार करता है तो वह हमें सदैव याद रहता है ।मुख्य समस्या लगाव की है आप अगर अपनी आत्मा के साथ लगाव रखोगे तो आप अनुभव करोगे कि आपका अन्य लोगों से लगाव कम होते जा रहा है । जो जीवन का सत्य है ।आत्मा ही अमर है बाकी जो भी धरती पर उत्पन्न होता है उसका विनाश जरूर होगा । मानवता और प्रेम के अलावा जीवन में कुछ भी नहीं है । जीने का जरिया अगर सही हो तो हम हर परिस्थिति में खुश रहेंगे ।

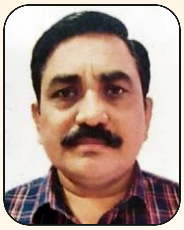

विश्व जनसंख्या दिवस

श्री शिवचरण मीना
सहायक
अपतट तेल टर्मिनल
वाड़ीनार

विश्व जनसंख्या दिवस हर साल 11 जुलाई को मनाया जाता है । इस दिन विश्व में बढती जनसंख्या और उससे होने वाले प्रभावों को लेकर चर्चा करने से लेकर अनेक प्रोग्रामों का आयोजन किया जाता है । इसी दिन जनसंख्या से जुडे विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरुकता लाने के लिए विश्व जनसंख्या दिवस मनाने की शरुआत सन् 1987 में हुई थी ।

बढ़ती जनसंख्या से विश्व जिस विकट स्थिति की ओर बढ रहा है, उस बारे में सभी देशों को सचेत करने के उदेश्य से ही इसकी शुरुआत की गई थी । विश्व जनसंख्या दिवस के दिन विश्व भर में अनेकों इवेन्ट कराये जाते हैं । इन कार्यक्रमों में भाषण प्रतियोगिता, सेमिनार वाद-विवाद प्रतियोगिता, संबधित विभिन्न कार्यशालाएं आदि अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । विश्व जनसंख्या दिवस में भाग लेने का सबसे अच्छा तरीका लोगों को जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों से अवगत कराना और उन्हें परिवार नियोजन और जनसंख्या नियंत्रण के अन्य सामान्य तरीकों के बारे में शिक्षित करना होता है ।

विश्व जनसंख्या दिवस एक वार्षिक कार्यक्रम है । इस तरह के दिन को चिन्हित करने कर मुख्य उदेश्य बढती वैश्विक आबादी और इस तरह की अधिक जनसंख्या के साथ उत्पन्न होने वाली समस्याओं और समस्याओं के बारे में जागरुकता लाना है । इस आयोजन का सुझाव सबसे पहले डो. जकारिया ने विश्व बैंक में एक जनसांख्यिकी विज्ञानी के रुप में दिया था । उनके कार्यकाल के दौरान ही जनसंख्या पांच अरब के आंकडे को पार कर गई थी । इसलिए 1989 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की गवर्निंग काउंसिल ने प्रत्येक 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के रुप में चिन्हित करने का निर्णय लिया गया था । इसलिए इस दिन को संयुक्त राष्ट्र के सभी भाग लेने वाले देशों द्वारा विभिन्न तरीकों से तीन दशकों से अधिक समय से मनाया जा रहा है ।

विश्व जनसंख्या दिवस के पीछे सबसे स्पष्ट उदेश्य पूरी आबादी को बडे पैमाने पर जनसंख्या वृद्धि के परिणामों के बारे में शिक्षित करना है । यह आवश्यक है कि लोग पर्यावरण और हमारी दुनिया के विकास पर पडने वाले प्रभाव को समझें । अत्याधिक जनसंख्या के कारण विश्व में प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से हास हो रहा है । इनमें से कुछ संसाधन जैसे जिवाम इंधन गैर-नवीनीकरणीय है जो पहले से ही बडी समस्याएं पैदा कर रहे हैं । इस तरह की कमी लोगों की आजिवीका और दैनिक जीवन पर कहर बरपा रही है ।

विश्व जनसंख्या दिवस का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू आम जनता को लगातार विकास के बारे में पढाना है । यह हमारे लिए जनसंख्या विस्फोट से होने वाले खतरे को कम करने का एक प्रभावी तरीका है । यह सुनिश्चित करता है कि हमारी आने वाली पीढियां भी उन्हीं विशेषाधिकारों और संसाधनो का आनंद ले सकें जिनका इस समय आनंद ले रहें हैं ।

देश विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर उपयोग परिवार नियोजन, गरीबी और मानवाधिकारों के बारे में जागरुकता और शिक्षा फैलाने के लिए कार्य भी करते हैं । संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या दिवस युएनडीपी के साथ संदेश फैलाने के लिए विभिन्न देशों और अन्य ऐजेन्सियों के साथ मिलकर काम करता है यहां तक कि वे लोगों को शिक्षित करने और वैश्विक जनसंख्या पर अंकुश लगानें में मदद करने के लिए कई कार्यक्रमों की योजना बनाते हैं और उन्हें क्रियान्वित करते हैं । हर देश इस दिन को अपने अपने तरीके से मनाता है । छात्र शामिल होते हैं, पोस्टर बनाए जाते हैं, कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं ।

हर स्त्री में एक शबरी

श्रीमती तन्वी उचवानी
वरिष्ठ लिपिक
सा.प्र.वि.

एक समय था जब रात को सोते समय बच्चों को कहानियां सुनाई जाती थी, अब बच्चे और माँ-बाप पूरा परिवार सोने से पहले अपना अपना मोबाईल देखते है ।

अचानक एक ग्रुप 'ननिहाल के मज़े' में अग्रेषित सदेंश (फोरवर्डेड़ मेसेज) आया :

'पति के लिए जूस बनाया और जूस पीने से पहले पति की आंख लग गई, नींद टूटी, तब तक एक घंटा हो चुका, पत्नी को लगा कि इतनी देर से रखा जूस कहीं खराब ना हो गया हो ?

उसने पहले जरा सा जूस चखा और जब लगा कि स्वाद बिगड़ा नहीं है, तो पति को दे दिया पीने को ... !

सवेरे जब बच्चों के लिए टिफिन बनाया तो सब्जी चख कर देखा, नमक, मसाला, ठीक लगा तब खाना पैक कर दिया !

स्कूल से वापस आने पर बच्चों को संतरा छील कर दिया ।

एक-एक परत खोल कर जांचने के बाद कि कहीं कीड़े तो नहीं है, खट्टा तो नहीं है, सब देखभाल कर जब संतुष्टि हुई तो बच्चों को एक-एक करके संतरे की फाँके खाने के लिए दे दीं !

दही का रायता बनाते समय लगा कि कहीं दहीं खट्टा तो नहीं हुआ और चम्मच से मामूली दहीं ले कर चख लिया !

'हाँ, ठीक है।' जब यह तसल्ली हुई तब ही दही का रायता बनाया .. !

सासू माँ ने सुबह खीर मन भर कर खाई और रात को फिर खाने को मांगी तो झट से बहु ने सूंघी और चख ली कि कहीं गर्मी में दिन भार की बनी खीर खट्टी ना हो गयी हो !

बेटे ने सैंडविच की फरमाईश की तो खीरा छील एक टुकड़ा खा कर देखा कि कहीं कड़वा तो नहीं है । ब्रेड को सूंघा और चखा की पुरानी तो नहीं दे दी दुकान वाले ने ! संतुष्ट होने के बाद बेटे को गर्मागर्म सैंडविच बनाकर खिलाया !

दूध, दहीं, सब्जी, फल आदि ऐसी कितनी ही चीजें होती है जो औरतें हम सभी को परोसने से पहले मामूली-सी चख लेती हैं !

कभी कभी तो लगता है कि हर मां, हर बीवी, हरेक स्त्री अपने घर वालों के लिए 'शबरी' की तरह ही तो है !

जो जब तक खुद संतुष्ट नहीं हो जाती, किसी को खाने को नहीं देती, और यही ककारण तो है कि हमारे घर वाले बेफिक्र होकर इस 'शबरी' के चखे हुए खाने को खाकर स्वस्थ और सुरक्षित महसूस करते हैं ।

हमारे भारतीय परिवारों की हर स्त्री 'शबरी' की तरह अपने परिवार का ख्याल रखती है और घर के लोग भी शबरी के इन झुटे बेरों को खा कर ही सुखी, सुरक्षित, स्वस्थ और संतुष्ट कहते है ! हर उस महिला को समर्पित जो अपने परिवार के लिये 'शबरी' है !!

राधे - राधे..

उपरोक्त संदेश मेरे भाई ने भेजा था, मेरी सोलह वर्षीय पुत्री ने इसे पढ़ा होगा, दूसरी सुबह जब वह चाय नास्ता करने मेज पर बैठी तब इसी संदेश पर चर्चा चालू हो गई ।

आज उसकी सोच कुछ अलग थी और बोली, शुक्र है कि मैं इस ग्रुप की सदस्य हुं और इतने अच्छे संदेश जो जीवन में हमारी सोच को सही मार्गदर्शन देते है उन्हें पढ़ने का मौका मिलता है ।

परंतु जब वह ग्रुंप में जुड़ी थी, तब उसे लगता था, इस ग्रुप में मामा -मामा, मासीयां, जीजाजी सब बहुत अजीब संदेश भेजते है ।

और पास ही बैठे मेरे पति ने पुत्री को बताया, तुमने यह संदेश पसंद किया, इस बात के लिए माम ने तुम्हे सराहा है, और कहा है 'ननिहाल के मजे' ग्रुप के संदेशे हंमेशा तुम्हें जीवन की नई दिशा की और ले जाएंगे ।

हमें खेद है कि आज 40 वर्ष बाद भी अंग्रेजी की गुलामी का यह बदनुमा दाग हमारे माथे पर नजर आता है, उसे मिटाना होगा । - ज्ञानी जैल सिंह

मोबाइल फोन

श्रीमती गोपी के. पांडे
वरिष्ठ लिपिक
मुख्य अभियंता विभाग

मोबाइल फोन जिसे सेल फोन के नाम से भी जाना जाता है । इस यंत्र का उपयोग मैसेज भेजने, ईमेल भेजने, फोटोग्राफी, वीडियो रिकोर्डिंग, गेमिंग, इंटरनेट, पैसों के लेनदेन आदि में किया जा रहा है ।

आज मोबाइल फोन में इंटरनेट के माध्यम से बच्चे ओनलाइन पढ़ाई भी कर सकते है । पिछले दो-तीन वर्षो में इसका अत्याधिक उपयोग होने लगा है क्योंकि कोविड-19 के कारण सभी बच्चों को ओनलाइन पढ़ाई करनी पडी । भारत में सभी बच्चों के माता-पिता लेपटोप नहीं ले सकते है उस स्थिति में मोबाइल एक अच्छे विकल्प के रूप में सामने आया । आज सभी बच्चे मोबाइल फोन से अच्छी तरह से परिचित हो गए हैं आज बहुत सी बड़ी-बड़ी कंपनियां भी घर से कार्य (वर्क फ्रोम होम) का विकल्प दे रहे हैं उसमें मोबाइल का ज्यादा उपयोग किया जा रहा है क्योंकि आज बाजार में एक से बढकर एक अच्छी सुविधा वाले मोबाइल मिल रहे है । मोबाइलो ने बाजार पर पूरी तरह से अपना प्रभुत्व जमा लिया है गरीब से लेकर अमीर आदमी के पास मोबाइल है यहां तक कि कुछ लोग तो दो-तीन मोबाइल रखते हैं । मोबाइल तो जैसे शरीर का एक अभिन्न अंग हो गया है ।

मोबाइल ने अखबार, केलकुलेटर, कैलेन्डर, टीवी सभी को दरकिनार कर दिया है । यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि सभी जानकारियां मोबाइल से मिल जाती है । मोबाइल में ही केलकुलेटर है, इसी में आप सभी अखबारों को पढ़ सकते हैं, टीवी के सभी चैनल मोबाइल पर उपलब्ध है ।

जहां मोबाइल से इतने सारे फायदे हैं वहीं कुछ कमिया भी इसमें है । मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से लोगों की खास करके बच्चों की आंखे कमजोर हो रही है। बच्चों के खेलकूद करने का समय भी मोबाइल ने ले लिया है । बच्चे घर से बाहर नहीं खेल कर बस मोबाइल में खेलते रहते हैं । लोगों ने एक दूसरे से मिलना बंद कर दिया है बस मोबाइल पर वीडियो कोलिंग कर लेते हैं । घर पर ही सब सामान सब्जियां, खाने पीने का सामान और दवाइयां आदि मंगा लेते हैं । घर से बाहर जाना ही नहीं पड़ता है इन सब कारणों से भी लोग खासकर बच्चों का शारीरिक विकास नहीं हो पा रहा है । इसलिए मां-बाप और समाज की जवाबदारी बढ़ जाती है कि इस दूषण से बच्चों को कैसे बचाएं ? हमें इसकी जो अच्छी योग्य सेवाएं हैं उन्हें जरूर प्रयोग में लाना चाहिए लेकिन जो हानिकारक पहलू है उस पर ध्यान देने की जरूरत है । इस प्रभावशाली यंत्र को समझदारी से प्रयोग में लेना चाहिए ।

वह दिन दूर नहीं है जब समाज में 'एकादशी व्रत' की तरह ही 'मोबाइल उपवास' करना शुरू कर दिया जाए अर्थात 1 दिन मोबाइल का प्रयोग नहीं करके परिवार वाले, समाज वाले एक दूसरे से मिलकर आमने-सामने बैठकर चर्चा कर सकें ।

अंत में मोबाइल का उपयोग करें लेकिन मोबाइल को अपने ऊपर हावी न होने दें ।

કેમ છે ?

ઓચિંતુ કોઇ મને રસ્તે મળે
ને કદી ધીરેથી પૂછે છે કેમ છે ?
આપણે તો કહીએ કે દરિયાશી મોજમાં
ને ઉપરથી કુદરતની રહેમ છે.

ફાટેલા ખિસ્સાની આડમાં મૂકી છે અમે
છલકાતી મલકાતી મોજ
એકલો ઊભું ને તોય મેળામાં હોઉ એવું
લાગ્યા કરે છે મને રોજ.

તાળું વસાય નહીં એવડી પટારીમાં,
આપણે ખજાનો હેમખેમ છે
આપણે તો કહીએ કે દરિયાશી મોજમાં
ને ઉપરથી કુદરતની રહેમ છે.

આંખોમાં પાણી તો આવે ને જાય
નતી ભીતર ભીનાશ થતી ઓછી
વધઘટનો કાંઠાઓ રાખે હિસાબ
નથી પરવા સમંદરને હોતી.

સૂરજ તો ઊગે ને આથમીએ જાય
મારી ઉપર આકાશ એમનેમ છે
આપણે તો કહીએ કે દરિયાશી મોજમાં
ને ઉપરથી કુદરતની રહેમ છે.

श्री यश दवे
सुपुत्र - लता दवे
वरिष्ठ लिपिक
अभियांत्रिकी विभाग

આજનું શિક્ષણ

આ સઘળાં ફૂલોને કહી દો યુનિફોર્મમાં આવે,
પતંગિયાઓને પણ કહી દો સાથે દફતર લાવે.

મન ફાવે ત્યાં માછલીઓને આમ નહીં તરવાનું,
સ્વિમિંગ પૂલના સઘળા નિયમોનું પાલન કરવાનું.

દરેક કુંપળને કોમ્પ્યુટર ફરજિયાત શીખવાનું,
લખી જણાવો વાલીઓને તુરંત જ ફી ભરવાનું.

આ ઝરણાઓને સમજાવો સીધી લીટી દોર,
કોયલને પણ કહી દેવું ના ટહુકે ભર બપોરે.

અમથું કેં આ વાદળીઓને એડમિશન દેવાનું,
ડોનેશનમાં આખેઆખું ચોમાસું લેવાનું.

એક નહીં પણ મારી ચાલે છે અઠ્ઠાવન સ્કૂલો,
આઉટ ડેટ થયેલો વડલો મારી કાઢે લે ભૂલો.

सुश्री जूही दादलानी
सुपुत्री : श्री ओमप्रकाश दादलानी
व्यापार संवर्धन एवं
जनसंपर्क अधिकारी, सा.प्र.वि.

माँ

माँ संवेदना है, भावना है, एहसास है ।
माँ कभी ना बुझने वाली अमिट प्यास है ।
माँ मेरे लिये आँखों का सिसकता किनारा है ।
माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है ।
माँ झुलसते हुए दिनों में कोयल की बोली है ।
माँ मेहंदी है, सिंदुर है, कुमकुम है, रोली है ।
माँ ममता है, त्याग है, तपस्या है, सेवा है ।
माँ जैसे फूँक से ठंडा किया एक कलेवा है ।
माँ कागज है, कलाम है, दावत है, स्याही है ।
माँ परमात्मा की दी हुई स्वयं एक गवाही है ।
माँ अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है ।
माँ जिंदगी के महल में आत्मा का भवन है ।
माँ चूड़ी वाले हाथों में मज़बूत कंधो का नाम है ।
माँ काशी है, काम है, मथुरा है, चारो धाम है ।
माँ पृथ्वी है, संसार है, जगत की धुरी है ।
माँ बिना इस श्रृष्टि की कल्पना अधूरी है ।
माँ सीता है, माँ लक्ष्मी है, दुर्गा है, पार्वती है ।
माँ ही तो है जो हमारा भविष्य सवाँरती है ।
माँ यह पंक्तियाँ आपके श्रीचरणों में अर्पण है ।
माँ आपको कोटि कोटि नमन है ।

सुश्री प्रियंका मोता
सुपुत्री श्री सतीष मोता
सहायक, वित्त विभाग

बाल मानस

व्यक्ति का बचपन उसके दिमाग ये काफी गहरा प्रभाव छोड जाता है । उसके बार में एक छोटी सी कहानी मेरे बचपन की मैं बताना चाहती है । जब विज्ञान की कक्षा में हमें पाचन तंत्र के बारे में पढाया जाता था, तब मुझे ऐसा लगता था की मानो मेरे पेट में छोटे छोटे बोने पेट में रहते है । जो चयापचय क्रिया में पेट में एक जगह से दुसरी जगह ले जाते है । चीजे सब के पास छोटी-छोटी टोकरीया है जिसमें रवाना एक जगह से दुसरी जगह लेके जा रहे है । एक छोटी-छोटी डिब्बी मे से उसमें रसायन मिला रहा है और एक सारी पोषक च़ीजे अलग कर रहा है । फिर यदि कभी मेरा पेट दर्द होता तो लगता के कोई एक बीमार हो गया है । फिर बडे हो के पता चला कि ये तो ऐसे काम नहीं करता शरीर हमारा । बाल मानस की यही विशेषता है कि कल्पना का कोई अंत नहीं होता ।

वक्त नहीं

श्री कैलाश उचवानी
सांख्यिकी सहायक,
यातायात विभाग

ज़िंदगी कितनी व्यस्त हो गई है,
कि अपने आप के लिए वक्त नहीं !
हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं !
दिन रात दौड़ती दुनिया में,
ज़िदगी के लिए वक्त नहीं !
माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं !
सारे रिश्तों को हम मार चुके,
अब हर उन्हें दफनाने का वक्त नहीं !
सारे नाम मोबाईल में है,
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं !
गैरों की क्या बात करे,
जब अपनों के लिए वक्त नहीं !
आँखों में है नींद भरी,
पर सोने के लिए ही वक्त नहीं !
दिल है गमों से भर हुआ,
पर रोने के लिए ही वक्त नहीं !
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने के लिए वक्त नहीं !
पराए एहसानों की क्या कदर करें,
जब अपने सपनों के लिए वक्त नहीं !
दिल में बहुत बातें है बताने के लिए,
लेकिन बताने के लिए वक्त नहीं !

हाय रे अंग्रेजी

श्री विशाल आर. टहिल्यानी
सुपुत्र : सपना आर. टहिलयानी
सहायक
नगर विकास (प्रभाग)

हाय रे अंग्रेजी, कैसी है तेरी बोली
अंग्रेजो ने यहां आकर, तुझे है बसाया !
अपनी राजभाषा भुलाकर, सभी ने तुझे अपनाया,
सभी के कंठ पर, तूं हें राज करती,
प्यार भी सभी तुझे करते ।
फिर भी तेरी टांग खींचते,
हाय रे अंग्रेजी, कैसी है तेरी बोली ।

सुबह शाम हर पल होता है तेरा गुणगान,
छोटे हो या बड़े सबकी है तु चहेती,
स्कूल, घर, दफ्तर में तेरा होता है बखान,
यहां वहां ढोलकर, मोहती हो सबको,
फिर भी तू भटकती रही हर पल,
चाहकर भी तू न बन सकी राजभाषा हमारी
'हिन्दी' ही है और रहेगी सबकी चहेती राजभाषा
हाय रे अंग्रेजी, कैसी हे तेरी बोली ।

मैं एक शिक्षक हूँ

श्रीमती सपना आर. टहिल्यानी
सहायक
नगर विकास (प्रभाग)

माता देती है जीवनदान, मैं बनाती हूँ इसे महान,
ज्ञान का दीप जलाकर, समाज की चम बढ़ाती हूँ,
विद्या का जल पिलाकर, जीने का ढंग सिखाती हूँ,
मैं शिक्षक हूँ, मुझे कमजोर समझना नहीं ।

मैंने समय का सद्ऊपयोग करना सिखाया सभी को,
फूलों को बगीचे को महकाया है मैंने,
शिष्ट, सदाचार का समाज बनाता हूँ,
मैं शिक्षक हूँ, मुझे कमजोर समझना नहीं ।

आदर्शों की अग्नि जलाकर, सच्चाई की राह सिखाई है मैंने,
डाक्टर, वकील, इंजीनियर, आइ.ए.एस. नापे है मैंने,
मैं नीव का पत्थर हूँ, कोई झुठी इमारत नही,
मैं शिक्षक हूँ, मुझे कमजोर समझना नहीं ।

कीचड़ में हाथ डालकर कमल को सींचा है मैनें,
समुद्र में गोता खाकर, मोती निकाले है मैंने,
शब्दों को चुनकर, माला में पिरोया है,
मैं शिक्षक हूँ, मुझे कमजोर समझना नहीं ।

हा, मैं हक से कहती हूँ, समाज मेरा ऋणी है,
वेतन पाकर मैंने, वतन को संजोया है,
भले सम्मान न करो, पर गलत लफ्ज न थोपता,
मैं शिक्षक हूँ, मुझे कमजोर समझना नहीं ।

માડી તારું કંકુ ખર્યું

श्रीमती लता दवे
वरिष्ठ लिपिक
अभियांत्रिकी विभाग

માડી તારું કંકુ ખર્યું ને સૂરજ ઊગ્યો
જગ માથે જાણે પ્રભુતાએ પગ મૂક્યો... કંકુ
મંદિર સરજાયું ને ઘંટારવ જાગ્યો,
નભનો ચંદરવો માએ આંખમાં આંજ્યો,
દીવો થવા મંદિરનો ચાંદો આવી પૂગ્યા... કંકુ
માવડીની કોટમાં તારલાં મોતી,
જનનીની આંખ્યુમાં પૂનમની જ્યોતિ,
છડી રે પુકારી માની મોરલો ટહુક્યો... કંકુ
નોરતાના રથ ઘુઘરા રે બોલ્યા,
અજવાળી રાતે માએ અમરત ઢોળ્યાં
ગગનનો ગરબો માના ચરણોમાં ઝૂક્યો... કંકુ.

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

दि. 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण श्री एस. के. मेहता

आजादी का अमृत महोत्सव - हर तिरंगा डीपीए, कंडला के आलोक में स्वतंत्रता दिवस - 2022 मनाया गया। श्री एस.के. मेहता, आईएफएस, अध्यक्ष ने उपाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारियों, सीआईएसएफ, फायर ब्रिगेड, स्कूली बच्चों बोर्ड सदस्यों, ट्रेड यूनियनों, कर्मचारियों और श्रमिकों की उपस्थिति में तिरंगा फहराया।

आजादी का अमृत महोत्सव - हर तिरंगा डीपीए, कंडला के आलोक में स्वतंत्रता दिवस - 2022 मनाया गया।

दि. 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्र दिवस के अवसर पर परेड का समीक्षा क्रम करते हुए अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण श्री एस. के. मेहता

विश्व महिला दिवस के उपलक्ष में 'माहवारी की जानकारी बदलेगी दुनिया सारी' की सोच को बढ़ावा देते हुए श्रीमती अमिता मेहता, धर्मपत्नी श्री एस. के. मेहता, अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दिनांक 10 मई, 2022 को स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन पर एक प्रदर्शनी का आयोजन कर 'आजादी का अमृत महोत्सव' का 61 वां सप्ताह मनाए जाने का दृश्य।

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

सर्तकता जागरूकता सप्ताह - 2022

दीनदयाल पोर्ट में दिनांक 1/12/2022 को
विश्व एड्स दिवस का आयोजन

16/12/2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के तहत
डीपीए कर्मचारियों के बच्चों द्वारा कराटे का प्रदर्शन

16/12/2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के तहत
आत्मरक्षा तकनीक प्रशिक्षण - सचिव महोदय, वरिष्ठ उप सचिव
महोदय एवं कार्मिक अधिकारी की उपस्थिति में

दि. 30 अगस्त 2022 को अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण
श्री एस. के. मेहता की अध्यक्षता में आयोजित
नराकास की छमाही आनलाईन बैठक का दृश्य

दि. 30 अगस्त 2022 को आयोजित नराकास की छमाही
आनलाईन बैठक का एक अन्य दृश्य

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

दि. 03 मार्च 2022 को नराकास के तत्वावधान में हिन्दी संगोष्ठी का उद्घाटन, अध्यक्ष महोदय, एस के मेहता जी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

दि. 03 मार्च 2022 को नराकास के तत्वावधान में हिन्दी संगोष्ठी का 'राजभाषा हिंदी और तकनीकी' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान देते हुए मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. एम. एल. गुप्ता, सेवानिवृत्त उप निदेशक, हिंदी प्रशिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, मुंबई।

दि. 21 दिसंबर, 2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला का समूहचित्र

दि. 21 दिसंबर 2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में राजभाषा कार्यान्वयन पर श्री नरेशचंद्र पाण्डेय द्वारा प्रशिक्षण देते हुए का दृश्य

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

दि. 10 जून 2022 को नराकास के तत्वावधान में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का दृश्य

दि. 29 जून 2022 को हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए डीपीए के वरिष्ठ उप सचिव, वाई. के. सिंह

दि. 29 जून 2022 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए सचिव, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण श्री सी. हरिचंद्रन

दि. 29 जून 2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला का एक दृश्य

दि. 21 नवम्बर 2022 को उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण श्री नंदीश शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य

दि. 30 जून 2022 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान पोर्ट की छमाही हिन्दी गृहपत्रिका 'लहरों का राजहंस' के 22 वें ई-अंक का विमोचन करते हुए श्री नंदीश शुक्ल, उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

माँ की सीख

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार विभाग

एक गांव में एक बहुत समझदार और संस्कारी औरत रहती थी ... एक बार वह अपने बेटे के साथ सुबह-सुबह कहीं जा रही थी तभी एक पागल औरत उन दोनों मां-बेटे के रास्ते में आ गई और उस लड़के की मां को बहुत बुरा-भला कहने लगी।

इस पागल औरत ने लड़े की मां को बहुत सारे अपशब्द कहे लेकिन फिर भी उस औरत की बातों का मां पर कोई असर नहीं हुआ और वह मुस्कुराते हुए आगे बढ़ गई।

जब उस पागल औरत ने देखा कि इस औरत पर तो उसकी बातों का कोई असर ही नहीं हो रहा है, तो वह और भी गुस्सा हो गई और उसने सोचा कि मैं और ज्यादा बुरा बोलती हूं। अब वो पागल औरत उस लड़के की मां, उसके पति और परिवार के लिए भला-बुरा कहने लगी। लड़के की मां फिर भी बिना कुछ बोले आगे बढ़ते रही।

काफी देर भला-बुरा कहने के बाद भी जब सामने से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई तो पागल औरत थककर लड़के की मां के रास्ते से हट गई और दूसरे रास्ते पर चली गई।

उस औरत के जाते ही बेटे ने अपनी मां से पूछा कि मां उस औरत ने आपको इतना बुरा-भला कहा, पिताजी और घर के अन्य लोगों तक के लिए बुरी बातें कही, आपने उस दुष्ट की बातों का कोई जवाब क्यों नहीं दिया - वो औरत कुछ भी जो मन में आया बोलती रही और आप मुस्कुराती रही, क्या उसकी बातों से जरा भी कष्ट नहीं हुआ ?

उस समय मां ने बेटे को कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप घर चलने को कहा। जब दोनों अपने घर के अंदर पहुंच गए तब मां ने कहा कि तुम यहा बैठो, मैं आती हूँ।

कुछ देर बाद मां अपने समझाया कि जब कोई तुसमे बिना मतलब उलझता है और भला-बुरा कहता है, तब उसके मैले शब्दों का असर क्या तुम्हें अपने साफ-सुथरे मन पर होने देना चाहिए ? ऐसे समय में गुस्सा होकर अपना साफ सुथरा मन क्यों खराब करना ???

किसी के फेंके हुए मैले अपशब्द हमें अपने मन में धारण करके अपना मन नहीं खराब करना चाहिए और न ही ऐसी किसी बात पर प्रतिक्रिया देकर अपना समयं हीं नष्ट करना चाहिए। जिस तरह तुम अपने साफ-सुथरे कपड़ो की जगह ये मैले कपड़े धारण नहीं कर सकते, उसी तरह मैं भी उस औरत के फेंके हुए मैले शब्दों की अपने साफ मन में कैसे धारण करती ??? यही वजह थी कि मुझे उसकी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा।

सिक्के के दो पहलु

सुश्री पर्ल उचवानी
सुपुत्री : कैलाश उचवानी
सांख्यिकी सहायक,
यातायात विभाग

एक बार एक केकड़ा समुद्र किनारे अपनी मस्ती में चला जा रहा था, और बीच बीच में रुक रुक कर अपने पैरों के निशान देख कर खुश होता।

आगे बढ़ता पैरों के निशन देखता उससे बनी डिजाइन देखकर खुश होता .. इतने में एक लहर आई और उसके पैरों के सब निशान मिट गए।

इस पर केकड़े को बड़ा गुस्सा आया, उसने लहर से बोला,“ए लहर मैं तो तुझे अपना मित्र मानता था, पर ये तूने क्या किया, मेरे बनाए सुंदर पैरों के निशानों को ही मिटा दिया कैसी दोस्त हो तुम।”

तब लहर बोली,“वो देखो .. पीछे से मछुआरे लोग पैरों के निशान देख कर ही तो केकड़ो को पकड़ रहे है, हे मित्र ! तुमको वो पकड़ न ले, बस इसीलिए मैंने निशान मिटा दिए !

सच यही है बार हम सामने की बातों को समझ नहीं पाते और अपनी सोच अनुसार उसे गलत समझ लेते है, जबकि हर सिक्के के दो पहलू होते है।

अतः मन में बैर लाने से बेहतर है की हम सोच समझ कर निष्कर्ष निकालें !!

वीर–भारत देश का सैनिक

श्री जयेश रामजी देवरिया
वरिष्ठ लिपिक
भंडार प्रभाग

वीर तुम बढ़े चलो, वीर तुम बढ़े चलो,
देश की शान के लिए, देश के आवाम के लिए ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

माना रास्ता कठिन है, तेरी मंजिल भी तो दूर है,
पर सरहद की रक्षा के लिए, तुम्हें वहाँ पहुँचना जरूर है ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

आए तेरी राह में पर्वत ऊँचे-ऊँचे और लम्बे-लम्बे रास्ते
पर तू ना रुका कहीं, तू ना झुका कहीं, है मान तेरे वास्ते ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

जब कभी देश हुआ घायल दुश्मनों की गोली से,
मुँह की खानी पड़ी उन्हें हिन्द सेना की टोली से ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

तूने ही तो मान दिया, रखी देश की शान है,
जान अपनी देके तूने, रखी देश की आन है ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

देश ही धर्म तेरा और देश ही तेरी जात है,
दुश्मन क्या मिटाए तुझे, क्या उसकी औकात है ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

भारत माता की रक्षा हेतु, तुने किये लाखों बलिदान है,
भारतवासियों को तेरे, हर बलिदान पे अभिमान है ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

सिर पे कफ़न बांध के तुम चल दिए सरहदों की राहों में,
देश के सपूत तुम, तुम्हीं देश के वीर हो आवाम की निगाहों में।
वीर तुम बढ़े चलो ....

वतन की आन के लिए तुम सिर कटाने से नहीं डरते,
कोशिशे की दुश्मनों ने पर, तुम मिटाने से नहीं मिटते ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

वतन के लिए जो तूने दी है कुर्बानियाँ,
देश याद रखेगा तेरी वो अमर कहानियाँ ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

हम जानते है देश तुम्हें जान से भी प्यारा है,
'वीर जवान अमर रहो' यही हमारा नारा है ।
वीर तुम बढ़े चलो ....

હે કૃષ્ણ !!

श्रीमती विशाखा डी. टाकोदरा
वरिष्ठ लिपिक
यांत्रिक विभाग

હે કૃષ્ણ...
શું તું વાંસળી વગાડે છે ???
નહિ !!!
તો મને કેમ એની ધ્વનિ સંભળાય છે ?

હૃદય કેમ એ વહેમ થી
મનના ઊંડાણમાં પ્રફુલ્લિત થાય છે.
હે કાન્હા, મને કેમ તારી વાંસળી સંભળાય છે !!

બધે શોધ્યો તને
પણ તું નજરોથી દુર રહ્યો..
આંખો મીંચી તો, એવા સુરો સંભળાય કે
મન ને થયું તું ફર્યો !!

આમ કેમ તું મને વિચલિત કર્યા કરે છે
હે કાન્હા,
મને કેમ તારી વાંસળી હજી સંભળાય છે !!!

જો તારે મળવું જ હોય તો
આમ લીલા કરી કેમ દૂર થાય છે ?
મારી સામે આવ ને,
આપને સાથે માખણ ખાશું ને રાસ પણ રમીશું.
તું આવી જ ને સામે,
એક વાર મને દેખાઈ ને,
ખબરનય કેમ પણ,
તને મળવાનું ખૂબ જ મન થાય છે...

હે કૃષ્ણ... મને હજીય તારી
વાંસળી સંભળાય છે... !!

ચાલો આજ ....

श्री राजेन्द्र सोदागर
प्रबंधन प्रशिक्षु
समुद्री विभाग

ચાલો આજ છેલ્લી વખત થોડું કામ કરી લઇએ,
મોડા સુધી બેસી રહીએ,
ચાલો આજ...

કાલ તો છેલ્લો દિવસ છે મારો આ દરિયાઇ વિભાગ માં અને DPA માં
બસ આજ થોડો નાસ્તો કરી લઇએ,
ચાલો આજ...

મળ્યા છે આ Marine Department ના ઓફિસરો ઘણાં,
બસ આજ એ યાદી હૈયે ભરી લઇએ
ચાલો આજ...

પૂછે કોઇ કે કેટલું કામ કર્યું,
જવાબમાં થોડું ખોટું બોલી લઇએ,
ચાલો આજ...

તમારી કડવી મીઠી યાદોને સમેટીને,
આ DPA ને અલવિદા કહીએ,
ચાલો આજ...

આત્મીય ભાવ કેળવાયો અહિંયા,
છોડી આ જગ્યા થોડું રડી લઇએ,
ચાલો આજ...

ન રહીએ એકબીજાથી 'અંજાન'
જતા જતા સૌ ને ગળે મળી લઇએ,
ચાલો આજ...

सुख का अर्थ

श्रीमती अंजु बी. आहुजा
वरिष्ठ लिपिक
समुद्री विभाग

हर रोज के संघर्ष से, जब टूट गया हो मन,
तब सुख सागर का, रह जाता कोई अर्थ नहीं ।
संबंध कोई भी हो, लेकिन, यदि दुख में साथ ना दें अपना,
फिर सुख में उन संबंधो का रह जाता कोई अर्थ नहीं ।
छोटी छोटी खुशियों का क्षण, फिसल जाते है हर रोज जहां,
फिर सुख की नित्य अपेक्षा का, रह जाता कोई अर्थ नहीं ।
मन जब घायल हो कटु वाणी से, अंतर्मन तार तार छलनी हो जाए,
फिर बाद में कहीं मधुर वाणी, रह जाता कोई अर्थ नहीं ।
सुख-साधन चाहे कितनी भी हो, पर तन रोगों का घर हो,
फिर अनंत सुविधाओं का, रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

हिन्दी भाषा को भारतीय जनता तथा संपूर्ण मानवता के लिए बड़ा उत्तरदायित्व संभालना है - डॉ॰ सुनीति कुमार चटर्जी ।

मुझे सिंधी होने का गर्व है

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार विभाग

बंगले, गाड़ी तो
'सिंधियों'
की घर-घर
की कहानी हैं...
तभी तो ये दुनिया
'सिंधियों'
की दीवानी हैं ।
अरे मिट गये 'सिंधियों को' मिटाने वाले क्योंकि
'सिंधी' आदमी का दिमाग खुद एक कहानी है ।
ये आवाज नही शेर की दहाड़ है...
हम खडे हो जाये तो पहाड़ है...
हम इस संसार वो सुनहरे पन्ने है...
जो भगवान ने ही चुने है..
दिलदार और दमदार
है 'सिंधी'
व्यवहार एवं व्यापार में मिसाल है 'सिंधी'
ईमानदारी का आधार है
'सिंधी'
पता नहीं कितनो की जान है
'सिंधी'
सच्चे प्यार पर कुरबान है
'सिंधी'
यारी करे तो यारो के यार है
'सिंधी'
और कोम्पीटीटर के लिए तूफान है
'सिंधी'
तभी तो दुनिया कहती है बाप रे खतरनाक है
'सिंधी'
जैसे शेरो के पुत्र शेर ही जाने जाते है,
लाखों के बीच
'सिंधी' पहचाने जाते है ।
रिसेप्शन देख कर परेशान हम कभी होते नहीं,
रिस्क उठाने से हम कभी डरते नही ।
हम अपने आप पर गर्व करते हैं,
क्योंकि मार्केट की नब्ज की जानकारी हम रखते हैं,
कोई ना भी दे हमें खुश रहने की दुआ,
तो भी कोई बात नहीं...
वैसे भी हम खुशियाँ रखते नहीं,
बाँट दिया करते हैं ।

मेरा देश

संत पुरुषो की पावन भूमि है भारत
पूरा विश्व भी जानता है यह बात
अनेको शहीद हुए देश भक्त
श्रद्धा से होती है नत मस्तक ।

मत भूलो शहीदों की कुरबानी
अनुसरण करो संत की जुबानी
आओं मिलकर दिखाए एकता की निशानी
कायम रखनी है हमें देश की आजादी ।
हम आजाद है, आजाद है यह बात है पुरानी
देश की सफलता में दिखानी है आगेवानी
केवल नारेबाजी की नहीं लगानी बाजी
रुढ़िवादी विचारों की भी करनी है नाबूदी ।

हम एक है एक है, अनेकता में भी एक है
केवल कह लेने से न बनते हम नेक है
आओं इस स्वतंत्रता के दिवस पर,
चर्चा करे देश की समस्याओं की,
समाधान ढूंढे एक जुट होकर,
कर्तव्य पालन करे मिलकर
न तोड़े कानूनों की लड़ी
तब बन पाएंगे हम भारत की कड़ी ।

मैनें तो अब चलना सीख लिया

श्रीमती राजेश पी. सिंह
वरिष्ठ लिपिक
नगर विकास स्कंध
अभियांत्रिकी विभाग

मैंने खुद से मिलना सीख लिया
प्यार भरी बातें करना शुरू किया
यही तो प्रमाण है
कि मैंने तो अब चलना सीख लिया

चोट खाकर दुःख तो
अब भी होता है
तमाशा करने के लिये
दिल अब न रोता है
मैंने आंसू पीना सीख लिया
हां यही सच है
मैनें तो अब चलना सीख लिया

रूठती हूँ मगर न नाराज़ होती हूँ,
करती हूँ वादे और खुद की
हमराज़ होती हूँ
अब मैंने खुद से नज़रे मिलाना
सीख लिया
हां यही सच है
मैंने तो अब चलना सीख लिया।

बुझो तो झाने

श्रीमती सुनीता पंजवानी
क. अभियंता
अभियांत्रिकी विभाग

1. वह कौन है जो जितना भी बूढ़ा हो जाए फिर भी हंमेशा जवान ही रहता है।

उत्तर : सैनिक (जवान)

2. वह कौन सी चीज है जिसे हम हंमेशा काटते रहते हैं, मगर फिर भी उसके टुकड़े नहीं कर सकते।

उत्तर : समय

3. वह क्या है जो आपके पास जितना ज्यादा होगा आप उतना ही कम देख सकेंगे।

उत्तर : अंधेरा

4. ऐसी चीज जिसे एक बार पहनने के बाद उतार नहीं सकते

उत्तर : : कफन

5. ऐसी चीज जिसे हम खा भी सकते हैं और पहन भी सकते हैं।

उत्तर : जूता

6. ऐसी चीज जो खाने के बाद ही नजर आती है।

उत्तर : ठोकर

7. वह क्या चीज है जो आपके बोलने से टूट जाती है।

उत्तर : खामोशी

8. वह चीज जिसे आग भी नहीं लगती और जलती भी नहीं है, फिर भी उसे जल्दी बुझाना पड़ता है।

उत्तर : प्यास

9. वह कौन है जिसके पास बहुत सारे दिल तो है, मगर शरीर का कोई दुसरा अंग नहीं है।

उत्तर : ताश की गड्डी

10. वह कौन सी चीज है जिसे किसी औजार से नहीं तोड़ा जा सकता।

उत्तर : वादा

मेरा भारत

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
भंडार विभाग

यह देश है मेरा, यह देश है तेरा - 2
छोडो यह तेरा मेरा - 2
बोलो साथ में यह देश है हमारा - 2

मत भूलो अपने कर्तव्य को,
पूरा करो अपनी जिम्मेदारियों को -2

काट दो जड़ से इस जातिवाद को,
जन्म दो मानवता के धर्म को,
ले आओं नव निर्माण, नव जागृति को - 2
निर्माण करो नव भारत का - 2

गर्व से बोलो हम भारतीय है
हम भारत की शान है
इसकी मीठी हमारी जान है
घर घर तिरंगा हमारा मान है

पूर्व से पश्चिम तक - 2
उत्तर से दक्षिण तक - 2
क्षमता हमारी कम नहीं, कम नहीं
मान है हमारी संस्कृति का - 2
वह दिन दूर नहीं, दूर नहीं

हर एक गाथा गायेगा भारत की -2
डंका बजेगा विश्व में
हर क्षेत्र में अग्रसर भारतीय - 2
सर्वोपरि पर होगा भारत - 2
बुलंदियो को छू लेंगे हम - 2
शान से बोलेंगे हम भारतीय है ।

पिता

श्रीमती ज्योति एम. भावनानी
प्रधान लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

माँ के जैसा ही आदर्श और महत्वपूर्ण,
किरदार पिता का भी होता है ।
बेहद ही संघर्ष से भरा जीवन,
पिता का भी तो होता है ।

पिता परिवार रूपी रेलगाड़ी के,
शक्तिशली इंजन स्वरूप
जो अपने माता-पिता और पत्नी रूपी,
दो पटरियों को हमेश संग लेकर चलता है ।

अपने बच्चों रूपी रेल के डिब्बों को,
अपने साथ लेकर दौड़ता रहता है ।
जीवन रूपी सफर में खुद के दोस्तों
और रिश्तेदारों को साथ लिए चलता है ।

गर्मी, सर्दी, आंधी और तूफान,
हर मौसम में वो भागता रहता है ।
बिना थके सुबह शम वो हर पल,
खूब ही मेहनत करता है ।

रात ही एकमात्र स्टेशन है,
जहाँ पर वो थोड़ी देर रुकता है ।
सुबह होते ही वो फिर से,
अपने सफर पे निकल पड़ता है ।

न सिर्फ दफ्तर की जिम्मेदारियों को,
बेहद ही बखूबी वो संभालता है ।
परंतु घर की जिम्मेदारियों को भी,
बड़ी ही कुशलता से निभाता है ।

अपने परिवार के हर सदस्य का
वो बेहद ही ध्यान रखता है ।
किसी से कोई उम्मीद कीये बगैर ही,
वो अपना हर फर्ज निभाता है ।

अपनी जवानी और अपनी खुशियाँ,
वो परिवार पे लुटाता है ।

हर एक रिश्ते को निभााने की कला,
वो खूब ही जानता है ।
अपनी जवानी और अपनी खुशियाँ
वो परिवार पे लुटाता है,
हर एक रिश्ते को निभाने की कला,
वो खूब ही जानता है ।

अपने बच्चों को आगे बढने की,
राह पिता ही दिखाता है ।
उतको जीवन में काबिल बनाने हेतु,
अपना सबकुछ दाँव पे लगा देता है ।

चाहे कितनी भी मुश्किलें आएँ लेकिन,
वो हरदम सबके आगे मुस्कराता है ।
खुद सादगी में हंमेश रहके,
अपने परिवार को को सबकुछ दिलाता है ।

अपना दर्द हरगिज़ भी नहीं वो,
किसी को कभी भी बताता है ।
धैर्य, शांति और अपनी बुद्धि से,
अपनी गृहस्थी वो चलाता है ।

खुद हो ईमानदारी, सच्चाई व कर्तव्यनिष्ठा जैसे,
सदगुणों को अपने जीवन में अपनाता है ।
अपने बच्चों को भी धैर्य, शांति व संतोष के,
मार्ग पर चलने का पाठ वो पढाता है ।

पिता मेहनती, निडर व फौलाद की तरह ही,
बेहद ही मज़बूत होता है ।
जो हर मुश्किल घडी का सामना करने हेतु,
हमेशा ही जागरूक रहता है ।

पिता के उपकार तो अनगिनत है,
जिनको चुकाना बिल्कुल ही नामुमकिन है ।
ऐसे अनोखे, आदर्श व सर्वगुण सम्पन्न किरदार को,
मेरा सच्चे दिल से नमन है ।

माथे की शिक्षा

श्री के. नेताजी
डी.आर. खलासी
सामान्य प्रशासन विभाग

बहुत समय पहले की बात है किसी गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था । एक दिन उस ब्राह्मण के घर कुछ अतिथि आए । ब्राह्मण की स्थिति इतनी खराब थी कि उन अतिथियों को खिलाने के लिए घर में अनाज तक नहीं था । इस स्थिति को लेकर ही ब्राह्मण और उसकी पत्नी के बीच थोड़ी कहासुनी होने लगती है ।

ब्राह्मणी कहती है,'तुम्हें पेट भरने योग्य अनाज कमाना भी नहीं आता है । इसी का नतीजा है कि आज घर में अतिथि आ खड़े हुए हैं और हमारे पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ भी नहीं है ।'

इस पर ब्राह्मण अपनी पत्नी से कहता है,'कल कर्क संक्रान्ति है । मैं कल भिक्षा लेने के लिए दूसरे गांव जाऊँगा । वहां एक ब्राह्मण ने मुझे आमंत्रित किया है । वह सूर्य देव की तृप्ति के लिए कुछ दान देना चाहता है । तब तक जो कुछ भी घर में है, उसे आदर सत्कार के साथ अतिथियों के सामने रखो ।'

ब्राह्मण की यह बात सुनकर ब्राह्मणी कहती है,'तेरी पत्नी होकर मैंने कभी सुख नहीं भोगा है । न कभी खाने को मेवा-मिष्ठान मिला, न ही ढंग के वस्त्र और आभूषण । आज तू कह रहा है कि जो भी घर में पड़ा हो, वो अतिथियों के समक्ष रख दो । जब कुछ है ही नहीं, तो मैं उनके सामने क्या रख दूं । पडे हैं, तो बस एक मुट्ठी तिल । तो क्या अतिथियों के सामने सूखे तिल रखना अच्छा लगेगा ।'

पत्नी की यह बात सुनकर ब्राह्मण कहता है,'ब्राह्मणी तुम्हे ऐसा बिल्कुल भी नहीं कहना चाहिए । कारण यह है कि इच्छा के अनुसार किसी भी मनुष्य को धन की प्राप्ति नहीं होती है । जरूरी है तो पेट भरना और पेट भरने योग्य अनाज तो मैं ले ही आता हूं । अधिक धन की चाहत अच्छी नहीं । ऐसी इच्छा का तुम्हें त्याग कर देना चाहिए । अधिक धन की इच्छा के चक्कर में मनुष्य के माथे पर शिखा बन जाती है ।'

माथे पर शिखा वाली बात सुन ब्राह्मणी बड़े ही आश्चर्य से ब्राह्मण से पूछती है,'अधिक धन की इच्छा में माथे पर शिखा हो जाती है । मैं कुछ समझी नहीं, जो भी कहना है खुलकर कहिए ।'

ब्राह्मणी के इस सवाल का जवाब देने के लिए ब्राह्मण अपनी पत्नी को 'श्किारी और गीदड़ की एक कहानी' सुनाता है । ब्राह्मण कथा की शुरुआत करता है ....

एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार की खोज कर रहा था । जंगल में कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद शिकारी को एक काले रंग का पहाड़ जैसा विशाल सुअर दिखाई देता है । सुअर को देखते ही शिकारी अपना धनुष उठा लेता है और कमान खींचते हुए सुअर पर निशाना लगा देता है ।

कमान से निकला हुआ तीर तीव्र गति से सुअर को घायल कर देता है ।घायल होने पर सुअर चिंघाड़ता हुआ शिकारी पर पलटवार कर देता है । सुअर के तीखे दांतो के शिकारी का पेट फट जाता है । इस तरह शिकार और शिकारी दोनों का ही अंत हो जाता है ।

इसी बीच खाने की तलाश में भकता हुआ एक भूखा गीदड़ वहां से होकर गुजरता है, जहां शिकारी तथा सुअर का शव पड़ा हुआ था । बिना मेहनत इतना सारा भोजन देख गीदड़ मन ही मन बहुत खुश होता है और मन ही मन सोचता है कि आज तो ईश्वर की बड़ी कृपा हुआ, जो इतना अच्छा और अधिक भोजन एक साथ मुझे मिला है । मैं इसे धीरे-धीरे और आराम से खाऊँगा, ताकि लंबे समय तक मैं इसे उपयोग में लाऊँगा । इस तरह मैं इस भोजन के साथ लंबे समय तक अपनी भूख को शांत रख पाऊंगा ।

इन सभी बातों पर विचार करते हुए गीदड़ सबसे पहले छोटी-छोटी चीजों का खाना शुरू करता है । तभी उसे शिकारी के मृत शरीर के पास धनुष पड़ा दिखता है । गीदड़ के मन में पहले उसे ही खाने का विचार आता है और वह धनुष पर चढ़ी डोर को चबाने लगता है ।

गीदड़ के चबाने से धनुष पर चढ़ी डोर टूट जाती है और डोर के टूटने से धनुष का एक सिरा वेग के साथ गीदड़ के माथे को भेदता हुआ ऊपर निकल आता है। गीदड़ के माथे को भेद कर धनुष का जो सिरा गीदड़ के सिर पर निकल आता है, वह ऐसा प्रतीत होता है मानो गीदड़ के माथे पर शिखा निकल आई हो। घायल होने के कारण कुछ देर बाद गीदड़ की भी मौत हो जाती है।

गीदड़ के चबाने से धनुष पर चढ़ी डोर टूट जाती है और डोर के टुटने से धनुष का एक सिरा वेग के साथ गीदड़ के माथे को भेदता हुआ ऊपर निकल आता है। गीदड के माथे को भेद कर धनुष का जो सिरा गीदड के सिर पर निकल आता है, वह ऐसा प्रतीत होता है मानो गीदड के माथे पर शिखा निकल आई हो। घायल होने के कारण कुछ देर बाद गीदड़ की भी मौत हो जाती है।

इतना कहते हुए ब्राह्मण कहता है,'ब्राह्मणी इसीलिए मैं कहता हूं कि जरूरत से अधिक लोभ से माथे पर शिखा आ जाती है।'

यह कथा सुनने के बाद ब्राह्मणी कहती है,'ठीक है अगर ऐसी ही बात है, तो घर में जो मुट्ठी भर तिल पडे हैं, उन्हीं को मैं अतिथियों को खिला देती हूं।'

कहानी से सीख :

हमारे पास जो भी होता है, हमें उसी में सुखी रहना चाहिए। किसी के पास ज्यादा चीख देखकर दुखी नहीं होना चाहिए।

अहम्

श्रीमती तन्वी उचवानी
वरिष्ठ लिपिक
सा.प्र.वि.

कल देखा था एक अजीब नज़ारा
बादलों से लड़ता हुआ सूरज बेचारा,
खुद ही खुद का वजूद ढूंढता हुआ हारा
जब बादलों ने उसे ढक दिया सारा।

अहम् इन्सान का कुछ सूरज सरीखा,
खुद को अव्वल दिखाने में ताउम्र झूझता दिखा
वक्त के बादलों ने उसे भी खूब ढका
तब सूरज सा थोड़ी देर वो भी थका।

पर फितरत इन्सान की वो कभी न झुका,
अहम् को पालपोस के सबको गिराना था सिखा।
सूरज सा गर संभल जाता जरा,
बादल छटते ही अस्तित्व उभर आता दुबारा।

पर सिखना इंसा की फितरत ही नहीं
जिन्दा हो या मर भी जाए सही,
गलत रहते गलती न माने कभी
अहम् में रहके काम करता सभी

वहम ये भी इंसा का है ये अजीब
अहम् को स्वयं के ले जाता न करीब
गर जंग लाज़मी है मिटने को अहम्
कर लेंगे हर कोशिश मिटायेंगे भरम,
बनाएये एक अदम्य इंसा तुझे
चमकता सूरज सा सितारा तुझे।

वर्ष 2022-23 के दौरान दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की महत्वपूर्ण घटनाएं

दिनांक : 06-04-2022

एम.वी. जीसीएल महानदी, 04-04-2022 को डीपीए, कंडला के कार्गो जेट्टी-14 से 1,02,200 मीट्रिक टन औद्योगिक नमक के भार के साथ चीन के लिए रवाना हुई, जो एम.वी. जीसीएल महानदी पर लोड किए गए 99,000 मीट्रिक टन कार्गो के पिछले रिकोर्ड को, मार्च, 2022 में पार कर गई । केन्द्रित निकर्षण द्वारा बढ़े हुए ड्राफ्ट के कारण कार्गो के बड़े पार्सल की लोडिंग संभव हो गई है । उच्च ड्राफ्ट डीपीए के माध्यम से बड़ी खेप लाकर व्यापार को, निर्यातक और स्टीवडोर्स-फ्रेंड्स ग्रुप, सीएचए-केएस छाया, वेसल एजेंट-चौघुले ब्रदर्स, लागत लाभ प्रदान करेगा ।

दिनांक : 16-04-2022

एम.वी. जीसीएल महानदी, 15-04-2022 को डीपीए, कंडला के कार्गो जेट्टी-14 से 1,03,800 मीट्रिक टन औद्योगिक नमक के भार के साथ चीन के लिए रवाना हुई, जो एम.वी. जीसीएल महानदी पर लोड किए गए 1,02,200 मीट्रिक टन कार्गो के पिछले रिकोर्ड को, 04-04-2022 में पार कर गई । केन्द्रित निकर्षण द्वारा बढ़े हुए ड्राफ्ट के कारण कार्गो के बड़े पार्सल की लोडिंग संभव हो गई है । उच्च ड्राफ्ट डीपीए के माध्यम से बड़ी खेप लाकर व्यापार को, निर्यातक और स्टीवडोर्स- नीलकंठ ग्रुप, - मिहिर एंड कंपनी वेसल एजेंट, मिहिर एंड कंपनी, लागत लाभ प्रदान करेगा ।

दिनांक : 17-04-2022

वेसल एम.वी. सेंट जोर्ज दीनदयाल पोर्ट कंडला पहुंचे और आशापुरा शिपिंग ग्रुप की, श्री आशापुरा स्टीवडोर्स इकाई द्वारा, 18 घंटे 25 मिनट में 57,000 मीट्रिक टन स्टोन एग्रीगेट लोड करके कार्गो हैंडलिंग में एक रिकॉर्ड बनाया । निर्यातक - रवि सीवर्ल्ड सर्विसेज और एजेंट स्कॉर्पियो शिपिंग एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड डीपीए-कंडला, इस मील के पत्थर को हासिल करने में, उनकी दक्षता और सक्रिय प्रयासों के लिए प्रबंधन में शामिल सभी हितधारकों की सराहना करता है ।

दिनांक : 20-01-2023

डीपीए, कंडला ने डीएसटी द्वारा आयोजित 'बेस्ट पोर्ट ऑफ द ईयर (नॉन-कटेनराइन्ड)' के लिए 'गुजरात स्टार अवार्ड्स' का 10वां भव्य गाला संस्करण जीता । श्री एस.के. मेहता आईएफएस, अध्यक्ष, श्री नंदीश शुक्ला, आईआरटीएस, उपाध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्राप्त किया गया ।

दिनांक : 22-03-2023

सिंधी नव वर्ष, चेटीचंड के अवसर पर आयोजित चेटीचंड जुलूस में झांकियों/रथों का प्रदर्शन करने के लिए डीपीए ने 88 भाग लेने वाले संगठनो के बीच प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है । डीपीए की झांकी ने बंदरगाह सुविधाओं और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला ।

हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हिन्दी को हमने संविधान में जो स्थान दिया है वह लोगों के जीवन का हिस्सा बने ।
- पी॰वी॰नरसिंह राव

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	50%	50%	50%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रोनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
11.	बेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(1) मंत्रालयो/विभागो और कार्यालयों के अधिकारियों) (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्युनतम)	25% (न्युनतम)	25% (न्युनतम)
	(2) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्युनतम)	25% (न्युनतम)	25% (न्युनतम)
	(3) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमो का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष के कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		-	
	(क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयो/विभागों/कार्यालयों/बैंको/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, 'क' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% 'ख' क्षेत्र में 25% और 'ग' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

दिनांक 29 सितंबर 2022 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के करकमलों से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा निर्मित हजीरा रो–पैक्स फेरी टर्मिनल, सूरत का वर्चुअल उद्घाटन किए जाने का विहंगम दृश्य ।

घोघा–हजीरा रो–पैक्स फेरी सेवा ने सौराष्ट्र और दक्षिणी गुजरात के बीच सड़क दूरी को ¼ करते हुए 380 कि.मी. से घटाकर मात्र 96 कि.मी. कर दिया है ।
जिससे दोनों क्षेत्रों के व्यापार एवं परिवहन को चौगुनी गति प्राप्त हुई है ।

लहरों का राजहंस

24वाँ अंक

जुलाई, 2022 - दिसम्बर, 2022

भारत का नं. 1 महापत्तन सतत 16 वर्षों से – दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

दि. 10 मई 2023 को नई दिल्ली में केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल और केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग राज्य मंत्री श्री श्रीपद नाईक द्वारा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को सर्वाधिक नौभार प्रहस्तन के क्षेत्र में ''सागर श्रेष्ठ सम्मान'' से सज्जित किया गया ।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)